हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 19 अप्रैल 2026

9 बेसहारा कुत्तों को लगवाएं एंटी रेबीज : शास्त्री

10 टोल महापंचायत में शामिल करने के लिए ...

DELHI WORLD PUBLIC SCHOOL, BHIWANI

(Under the aegis of Delhi World Foundation, New Delhi) CBSE Affiliation No. 530718

An Innovative School that always works with 360° Educational Model

Meet Our Scholars of Class 10th Session 2025-26

1st Position

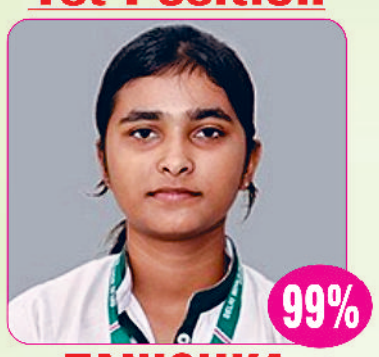

99%

TANISHKA

2nd Position

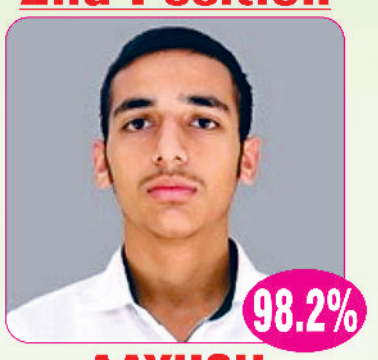

98.2%

AAYUSH

3rd Position

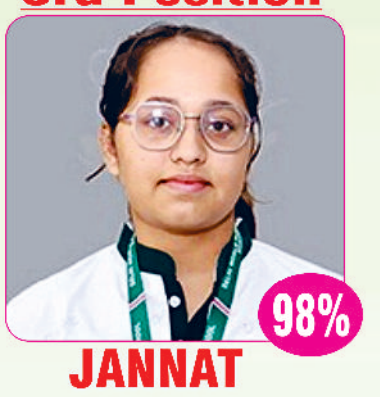

98%

JANNAT

3rd Position

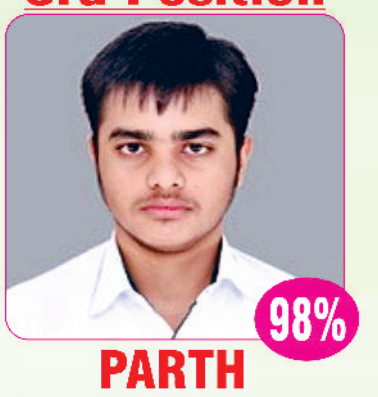

98%

PARTH

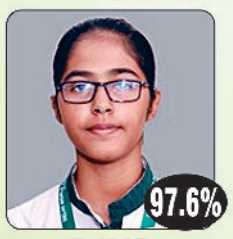

97.6%

RIYA

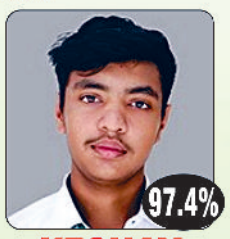

97.4%

KESHAV

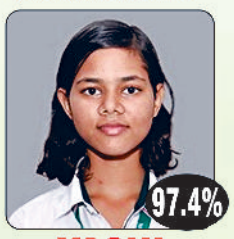

97.4%

YASHI

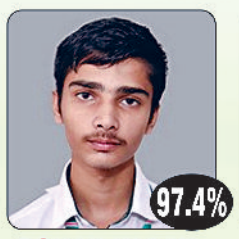

97.4%

ROHAN YADAV

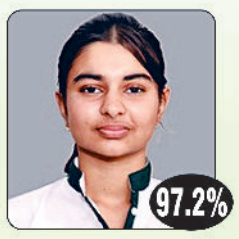

97.2%

PRACHI PANWAR

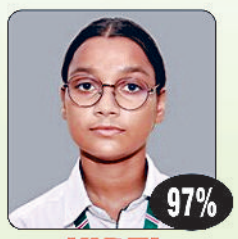

97%

KIRTI

97%

AARAV GUPTA

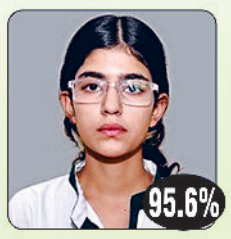

95.6%

RICHA

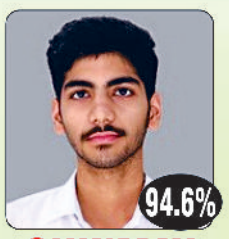

94.6%

CHINMAY

94.6%

ANANYA SINGH

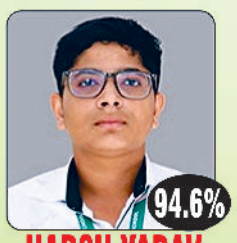

94.6%

HARSH YADAV

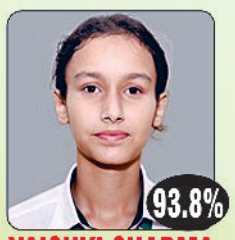

93.8%

VAISHVI SHARMA

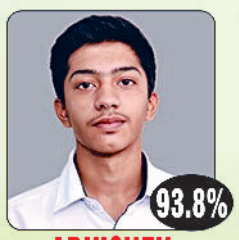

93.8%

ABHISHEK

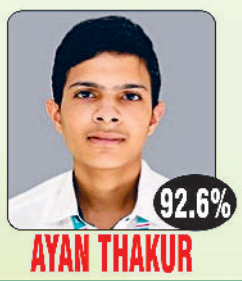

92.6%

AYAN THAKUR

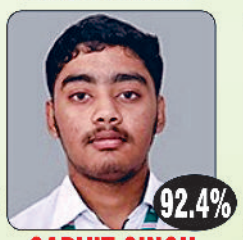

92.4%

GARVIT SINGH

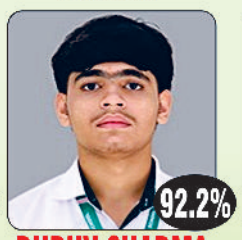

92.2%

DHRUV SHARMA

91.6%

AKSHIT

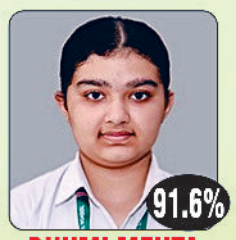

91.6%

BHUMI MEHTA

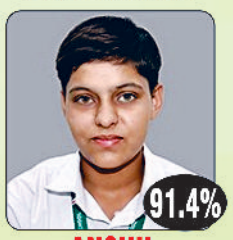

91.4%

ANSHU

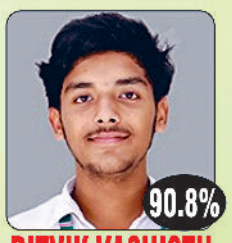

90.8%

RITVIK VASHISTH

ADMISSIONS OPEN

Session 2026-2027

Results at a Glance

School Topper	: 99%
Above 95%	: 12
Above 90%	: 24
Above 85%	: 33
Merit Holders	: 53
Total Appeared	: 73

DEVSAR MORH, LOHARU ROAD, BHIWANI-127021 ✆8685800161, 9350310248 E-mail : dwps_bhiwani@hotmail.com

खबर संक्षेप

सरसों चोरी मामले में आरोपी गिरफ्तार

बवानीखेड़ा। पुलिस ने सरसों चोरी के मामले में कार्रवाई करते हुए तीसरे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। राजेंद्र कुमार, निरीक्षक हैफड गोदाम, बवानी खेड़ा द्वारा थाना बवानी खेड़ा में शिकायत दर्ज करवाई गई थी। शिकायतकर्ता ने बताया कि 29 जनवरी 2019 की रात अज्ञात चोरों ने बवानी खेड़ा स्थित हैफड गोदाम के गेट की जाली तोड़कर अंदर प्रवेश किया और सरसों चोरी कर ली। शिकायत के आधार पर थाना बवानी खेड़ा में मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। जांच के दौरान 17 अप्रैल को कार्रवाई करते हुए थाना बवानी खेड़ा के उपनिरीक्षक वीरेंद्र सिंह ने मामले में तीसरे आरोपी को माननीय न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान आकाश उर्फ गिन्नी पुत्र राजपाल, निवासी गांव भुरजा, थाना गदपुरी, जिला पलवल के रूप में हुई है।

लूजोता गांव के पास मिला मृत लकड़बग्घा

नांगल चौधरी। निजामपुर रोड पर लूजोता गांव के पास लकड़बग्घा मृत अवस्था में मिलने से इलाके में भय का माहौल बना हुआ है। सूचना पाकर वाइड लाइफ विभाग की टीम मौके पर पहुंची तथा मृत जानवर का निरीक्षण किया। गले पर घाव मिलने से सड़क दुर्घटना में मौत होने की आशंका जताई गई है। सुबह राहगीरों को सड़क से थोड़ी दूरी तक अजीब नस्ल का जानवर पड़ा दिखाई दिया। नजदीक जाने पर मृत जानवर की पुष्टि हुई। लोगों ने फोरेस्ट व वाइड लाइफ विभाग में घटना की शिकायत दर्ज कराई। घटना स्थल पर पहुंचे जीव जंतु विभाग के निरीक्षक चरण सिंह ने आशंका जताई की लकड़बग्घा सड़क पार करते समय किसी वाहन की चपेट में आ गया होगा।

युवक को पिकअप ने मारी टक्कर, मौत

मंडी अटेली। गांव कलवाड़ी में खाना खाकर अपनी पत्नी के साथ टहलने निकले एक व्यक्ति की सड़क हादसे में मौत हो गई। गत 16 अप्रैल रात्रि करीब 9 बजे कलवाड़ी गांव के समीप एक निजी स्कूल के पास 54 वर्षीय नरेश पुत्र ओमप्रकाश अपनी पत्नी के साथ टहल रहे थे। इसी दौरान पीछे से आ रही एक पिकअप गाड़ी ने उन्हें टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल अवस्था में उन्हें तुरंत नारनौल के एक अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। दौंगड़ा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करवाया और बाद में शव परिजनों को सौंप दिया।

हादसे में मोटरसाइकिल सवार की जान गई

मंडी अटेली। राता कलां के समीप शुक्रवार सायं करीब सात बजे बाइक और गाड़ी की टक्कर में एक व्यक्ति की मौत हो गई। राता कलां रोड पर गढ़ी रूथल निवासी करीब 57 वर्षीय जितेंद्र पुत्र संपत सिंह अपनी बाइक पर जा रहे थे, तभी एक गाड़ी से उनकी टक्कर हो गई। हादसा इतना गंभीर था कि उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

परशुराम जन्मोत्सव पर हवन एवं संगोष्ठी आज

सतनाली मंडी। भगवान परशुराम वेलफेयर सोसायटी सतनाली के तत्वावधान में रविवार को भगवान परशुराम जन्मोत्सव मनाया जाएगा। भगवान परशुराम वेलफेयर सोसायटी के निवर्तमान प्रधान शिवकुमार शास्त्री ने बताया कि श्री परशुराम पार्क में प्रातः सात बजे से हवन यज्ञ, संगोष्ठी एवं प्रसाद वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

गुजरवास में शतरंज प्रतियोगिता आज

मंडी अटेली। गांव गुजरवास में 19 अप्रैल को शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य लोगों को शतरंज जैसे बौद्धिक खेल के प्रति जागरूक करना और उन्हें इसे सीखने व सिखाने के लिए प्रेरित करना है। कमांडो सुमेर सिंह ने बताया कि शतरंज एक उत्कृष्ट मानसिक खेल है, समझने और सही समय पर निर्णय लेने की क्षमता को भी मजबूत बनाता है।

करीब 17 साल बाद सड़क नए सिरे से बनेगी

काठ मंडी रोड का होगा कायाकल्पः 1.17 करोड़ की लागत से निर्माण कार्य शुरू

विधायक सुनील सांगवान ने नारियल फोड़कर किया शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

दादरी शहर के काठ मंडी रोड का लंबे इंतजार के बाद आखिरकार कायाकल्प होने जा रहा है। शुक्रवार को विधायक सुनील सांगवान ने करीब 1.17 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले इस महत्वपूर्ण सड़क निर्माण कार्य का विधिवत शुभारंभ नारियल फोड़कर किया। इस मौके पर नगर परिषद चेयरमैन बक्शी सैनी, वाइस चेयरमैन संदीप फोगाट सहित कई पार्षदों और मंडी व्यापारियों ने भी भाग लिया और कस्सी चलाकर निर्माण कार्य की शुरुआत की। कार्यक्रम के दौरान मिठाइयां बांटकर खुशी जाहिर की गई। विधायक सुनील सांगवान ने बताया कि काठ मंडी रोड का निर्माण वर्ष 2009 में करवाया गया था, लेकिन समय के साथ इसकी स्थिति जर्जर हो चुकी थी। अब करीब 17 साल बाद इस सड़क को नए सिरे से तैयार किया जाएगा, जिससे शहर के यातायात में सुधार होगा और लोगों को आवागमन में बड़ी राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस सड़क के बनने से न केवल दादरी शहर बल्कि आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को भी सीधा लाभ पहुंचेगा। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार, जिसका नेतृत्व नायब सिंह सैनी कर रहे हैं, दादरी के विकास को लेकर निरंतर प्रयासरत है। अब तक क्षेत्र में कई विकास परियोजनाएं लागू की जा चुकी हैं और आने वाले समय में और भी योजनाएं लाई जाएंगी। इस अवसर पर मौजूद व्यापारियों और स्थानीय लोगों ने भी इस परियोजना का स्वागत करते हुए उम्मीद जताई कि सड़क निर्माण कार्य तय समय में पूरा होगा और क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी।

चरखी दादरी। निर्माण कार्य का शुभारंभ करते विधायक सुनील सांगवान।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष रीतू गोयल, नगर पार्षद नवीन प्रजापति, पार्षद विक्रम श्योराण, पार्षद विनोद वाल्मीकि, पार्षद सतवीर चौहान, पार्षद कुलदीप सैनी, पार्षद जगमाल सैनी, पार्षद नवीन बिंदल, पार्षद प्रतिनिधि मितेश गोयल, पूर्व पार्षद प्रवीन सैनी, सतीश बजाज इत्यादि मौजूद रहे।

चित्रकला में कर्ण व हरप्रीत प्रथम

■ आदर्श कोचिंग सेंटर में सुलेख और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

आदर्श कोचिंग सेंटर में विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारने के लिए सुलेख लेखन और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अध्यक्षता संचालक आदेश वत्स ने की। प्रतियोगिता के दौरान बच्चों अपनी कला व लेखन कौशल का प्रदर्शन किया। सुलेख प्रतियोगिता में विभिन्न कक्षा वर्गों के आधार पर विजेताओं का चयन किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में उर्मिला, प्रिया, योगिता, रजनी, प्रवेश व अन्य स्टाफ सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

चरखी दादरी। चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी

इसमें समर, नैतिक, अमरदीप और वंश ने अपने-अपने वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं नक्ष यादव, नितेश जटराणा,यशांश वत्स , भारत और मोनू दूसरे स्थान पर रहे। तीसरे स्थान पर जतिन, जश्न, इशिका, वंशिका, नत्र यादव, निखिल, प्रीति, निर्देश और देव ने बाजी मारी। चित्रकला में अपनी कलाकारी का लोहा मनवाते हुए कर्ण और हरप्रीत ने प्रथम स्थान हासिल किया। यक्ष और रोहित दूसरे स्थान पर रहे, जबकि वाशुदेव और प्रतीक ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। संचालक आदेश वत्स ने सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी और कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।

खराब वायु गुणवत्ता : ग्रेप स्टेज-वन लगाया

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

■ अगले दो दिनों वायु गुणवत्ता इसी श्रेणी में रहने की संभावना

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते वायु प्रदूषण को देखते हुए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान के तहत स्टेज-वन ('खराब' श्रेणी, एक्यूआई 201-300) को तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया है। 16 अप्रैल को दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स 226 दर्ज किया गया, जो 'खराब' श्रेणी में आता है। भारतीय मौसम विभाग और आईआईटीएम के पूर्वानुमान के अनुसार, अगले दो दिनों तक भी वायु गुणवत्ता इसी श्रेणी में रहने की संभावना है। हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भिवानी के क्षेत्रीय अधिकारी शैलेंद्र अरोड़ा बताया कि ने जिला के सभी संबंधित विभागों और अधिकारियों को निर्देश जारी करते हुए कहा है कि ग्रेप के तहत निर्धारित उपायों को सख्ती से लागू किया जाए, ताकि वायु प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सके। जिले भिवानी में वायु गुणवत्ता सूचकांक एक्यूआई 201-300 (खराब श्रेणी) में पहुंचने के चलते प्रशासन ने प्रदूषण नियंत्रण के लिए सख्त कदम उठाकर स्टेज-वन को लागू कर दिया गया है।

भाजपा राज में किसान बेहाल : प्रदीप

■ भाजपा सरकार की नीतियों पर तीखा हमला बोला

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय सचिव प्रदीप नरवाल ने शनिवार को बवानी खेड़ा विधानसभा क्षेत्र का सघन दौरा कर प्रदेश की कृषि व्यवस्था और भाजपा सरकार की नीतियों पर तीखा हमला बोला।

नरवाल ने बवानी खेड़ा, लोहारी जाटू, मंढाणा और कुंगड़ सहित कई अनाज मंडियों और गांवों का दौरा कर किसानों की समस्याओं को सुना और जमीनी हकीकत का जायजा लिया। दौरे के बाद मीडिया से रूबरू होते हुए प्रदीप नरवाल ने कहा कि मंडियों के हालात देखकर स्पष्ट है कि भाजपा सरकार में किसान पूरी तरह बेहाल है। उन्होंने आरोप लगाया कि मंडियों में किसानों की मेहनत की फसल के ढेर लगे हैं, लेकिन खरीद प्रक्रिया की सुस्ती और भुगतान में हो रही देरी का खामियाजा किसानों को भुगतना पड़ रहा है।

भिवानी। आढ़तियों से बातचीत करते अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय सचिव प्रदीप नरवाल।

बिचौलिए उठा रहे फायदा

नरवाल ने बताया कि मंडियों में न तो सिर छिपाने की पर्याप्त जगह है और न ही बुनियादी सुविधाएं। उन्होंने कहा कि किसान कई-कई दिनों तक मंडियों में अपनी फसल के साथ रातें काटने को मजबूर हैं। फसल बेचने के बाद भी हफ्तों तक भुगतान नहीं मिलता, जिससे किसान को अगली बुवाई और घर के खर्चों के लिए फिर से कर्ज के जाल में फंसना पड़ रहा है। भाजपा सरकार के वादों को खोखला बताते हुए कांग्रेस सचिव ने कहा कि एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) पर खरीद की कोई कानूनी गारंटी नहीं होने का फायदा बिचौलिए उठा रहे हैं।

महिलाओं के उत्थान की पक्षधर नहीं कांग्रेस

■ संविधान संशोधन विधेयक पारित नहीं होने पर भाजपा नेताओं ने कांग्रेस पर तीखा प्रहार किया

हरिभूमि न्यूज ⏭बहल

महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए शुक्रवार को केन्द्र सरकार द्वारा लोकसभा में लाया गया संविधान संशोधन विधेयक पारित नहीं होने पर भाजपा नेताओं ने कांग्रेस पार्टी पर तीखा प्रहार किया है। भाजपा नेताओं ने कहा कि विपक्ष खासकर कांग्रेस पार्टी महिलाओं के उत्थान और विकास की पक्षधर नहीं है।

आज पूरा देश महिलाओं को आगे बढता हुआ देखना चाहता है लेकिन पूरा विपक्ष इस डर में हैं कि महिलाएं सशक्त हुई तो वे कभी सत्ता की दहलीज तक नहीं पहुंच पाएंगे।

नेक काम था

भाजपा ओबीसी मंडल प्रधान नवीन बागान बिघनोई ने कहा कि यह पूरे देश की आधी आबादी से जुड़ा एक नेक काम था जिसमें महिलाओं को उनका हक, सम्मान और राष्ट्र निर्माण में भागेदारी मिलनी थी। पर, कांग्रेस समेत पूरे विपक्ष ने इस कानून में महिलाओं का फायदा नहीं देखा और केवल यह सोचकर खिलाफ वोट किया कि इससे भाजपा को फायदा होगा।

दुर्भाग्यपूर्ण

भाजपा बहल मंडल कोषाध्यक्ष हनुमान शर्मा ने कहा कि यह अधिनियम देश की महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम सिद्ध होता लेकिन कांग्रेस पार्टी और अन्य विपक्षी नेताओं ने इसके विपक्ष में वोट कर इसे पारित होने से रोक दिया जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय है। हनुमान शर्मा ने कहा कि वर्षों से महिला आरक्षण की मांग की जा रही थी लेकिन गैर भाजपा सरकारों ने इस दिशा में केवल राजनीतिक लाभ लेने का प्रयास किया।

जनता देख रही

भाजपा नेता एवं पूर्व सरपंच गजानंद अग्रवाल ने कहा कि शुक्रवार का दिन हमेशा इतिहास में इस बात को गवाह बनेगा कि कांग्रेस समेत पूरे विपक्ष ने महिलाओं के अधिकार और सम्मान के लिए बनने वाले कानून में रोड़ा बनने का काम किया है। विपक्ष का यह रवैया महिलाओं के सम्मान और अधिकारों के खिलाफ है। देश की जनता सब देख रही है और आने वाले समय में इसका जवाब भी देगी। उन्होंने कहा कि भाजपा हमेशा से महिला सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध रही है और प्रधानमंत्री के नेतृत्व में महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए ऐतिहासिक फैसले लिए जा रहे हैं।

राजा उत्तानपाद और ध्रूव भगत का मंचन

■ मेरे कहे त ब्याह करवा ले... बापोड़ा में हरियाणवी सांग के जरिए गूँजी पौराणिक गाथा

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भगवान परशुराम जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में गांव बापोंड़ा की धरती हरियाणवी संस्कृति और भक्ति के रंग में सराबोर हो गई है। हरियाणा कला परिषद (रोहतक मंडल) द्वारा आयोजित दो दिवसीय सांग कार्यक्रम के पहले दिन पौराणिक कथाओं और लोक गायकी का अद्भुत संगम देखने को मिला। कार्यक्रम की शुरुआत प्रसिद्ध सांगी रामशरण अत्री और उनकी टीम ने राजा उत्तानपाद और ध्रूव भगत के मंचन से की। सांग के माध्यम से बताया गया कि कैसे अवधपुरी के न्यायकारी राजा उत्तानपाद संतान न होने के कारण चिंतित रहते थे। मंच पर जब नारद जी और रानी सुनीति का संवाद हुआ, तो दर्शक भावविभोर हो उठे। सांग की मुख्य पंक्तियों मेरे कहे त ब्याह करवा ले पाछे धूल बिटोले गा..ने दर्शकों को अपनी लोक विरासत से जोड़े रखा। कथा के अनुसार नारद के मशवरे पर राजा ने दूसरी शादी की, लेकिन छोटी रानी सुरुचि ने महलों में कदम रखते ही बड़ी रानी सुनीति को बाहर निकलवा दिया। आगे चलकर ध्रुव ने अपनी कठिन तपस्या से न केवल भगवान को पाया बल्कि भारतवर्ष में धुरव तरा के रूप में अमर ख्याति प्राप्त की। कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए और अपनी प्रतिक्रिया साझा करते हुए सतवीर गौड़ ने कहा कि आज के आधुनिक दौर में जब युवा पाश्चात्य संस्कृति की ओर भाग रहे हैं, ऐसे में हरियाणा कला परिषद का यह प्रयास सराहनीय है। भगवान परशुराम के जन्मोत्सव पर सांग जैसे पारंपरिक लोक नाट्य के जरिए नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली इतिहास और पौराणिक कथाओं से रूबरू करवाया जा रहा है। गाँव बापोंड़ा और आसपास के लोगों का उत्साह यह बताता है कि हमारी लोक कलाओं की जड़ें बहुत गहरी हैं।

भिवानी। बापोड़ा में आयोजित सांग में अपनी प्रस्तुति देते हुए। फोटो: हरिभूमि

भंडारे का आयोजन होगा

सतवीर गौड़ ने बताया कि कार्यक्रम का समापन रविवार को और भी भव्य तरीके से होगा। रविवार के कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण के रूप में विशिष्ट अतिथि ओलंपियन योगेश्वर दत्त और हरियाणा कला परिषद (रोहतक मंडल) के निदेशक गजेंद्र फोगाट विशेष रूप से शिरकत करेंगे। वहीं उत्सव के दूसरे दिन सुबह भव्य हवन-यज्ञ और उसके उपरांत विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान कार्यक्रम में गाँव के बुजुर्गों, युवाओं और महिलाओं ने बड़ी संख्या में शिरकत की।

भाजपा सरकार कर रही किसानों के साथ गलत व्यवहारः सविता मान

■ फसल की आवक जोरों पर है, लेकिन खरीद नाममात्र की हो रही: सविता मान

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

हरियाणा प्रदेश महिला कांग्रेस कमेटी की पूर्व महासचिव सविता मान ने भाजपा सरकार पर किसानों के साथ गलत व्यवहार करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि मंडियों में अपना अनाज लेकर पहुंचने वाले किसानों से अपराधियों जैसा व्यवहार किया जा रहा है। कई तरह की शर्तों और प्रक्रियाओं के कारण किसान परेशान हैं और उनकी फसल की खरीद लगभग ठप हो गई है। जनसंपर्क अभियान के दौरान कांग्रेस नेत्री सविता मान ने कहा कि पहले किसानों पर पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन की शर्त थोपी, इसके बाद गेट पास, बायोमेट्रिक, ट्रैक्टर नंबर, वेरिफिकेशन और गारंटर जैसी अनेक प्रक्रियाएं लागू कर दी। उक्त सभी कारणों से किसान मंडियों में फंसकर रह गए हैं। उन्होंने कहा कि फसल की आवक जोरों पर है, लेकिन खरीद नाममात्र की हो रही है। मान ने कहा कि प्रदेशभर की मंडियों में अन्न एवं अन्नदाता दोनों की हालत खराब है। उन्होंने आरोप लगाया कि न पोर्टल सही तरीके से चल रहा, न गेट पास बन रहे, न ही बोली लग रही है, ऐसे में किसान की दयनीय स्थिति बनी हुई हैं, जिसकी जिम्मेदार भाजपा सरकार हैं। इसके अलावा फसल खरीद, उठान और भुगतान की प्रक्रिया भी पूरी तरह से प्रभावित है, जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

■ सरकार महिला आरक्षण को जान बूझकर टाल रही: मान

कांग्रेस नेत्री सविता मान

समाज में डाली फूट

सविता ने कहा कि महिला आरक्षण को वर्ष 2024 के चुनाव में ही लागू कर देना चाहिए था, लेकिन भाजपा सरकार इसे जान बूझकर टाल रही है, ये लोग समाज को बांटने वाले हैं और इन्होंने हमेशा समाज में फूट, अविश्वास एवं डर पैदा किया है।

प्रदेश में जंगलराज प्रदेश के पूर्व उप मुख्यमंत्री तक सुरक्षित नहीं : कृष्ण

हरिभूमि न्यूज ⏭तोशाम

जननायक जनता पार्टी के भिवानी जिले के बीसी सेल के जिला अध्यक्ष कृष्ण वर्मा ने प्रेस को जारी बयान में कहा कि गत 16 अप्रैल को जननायक जनता पार्टी के युवा प्रदेश अध्यक्ष छात्रों की जायज मांगों को लेकर शांतिपूर्ण तरीके से गुरु जंभेश्वर यूनिवर्सिटी के वीसी से मिलने के लिए गए हुए थे।

इस दौरान वीसी ने मिलना तो दूर दरवाजा भी खोलना मुनासिब नहीं समझा और अनावश्यक रूप से पुलिस बुलाकर और माहौल खराब करने के लिए महिला पुलिसकर्मियों को आगे खड़ा कर दिया और जननायक जनता पार्टी युवा प्रदेश अध्यक्ष दिग्विजय सिंह चौटाला व छात्र ईकाई इनसो के पदाधिकारियों पर झूठे मुकदमे दर्ज करवा दिए। झूठा मुकदमा दर्ज होने पर अगले दिन 17 अप्रैल को दिग्विजय सिंह चौटाला पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला को साथ लेकर अपने साथियों सहित सिटी थाना हिसार में गिरफ्तारी देने के लिए पहुंचे थे। वहां दिग्विजय सिंह चौटाला की गिरफ्तारी न लेने के बाद दुष्यंत चौटाला एसपी हिसार से मिलने जा रहे थे तो रास्ते में हिसार सीआई स्टाफ के इंस्पेक्टर ने हथियार हवा में लहराते हुए दुष्यंत चौटाला के काफिले के पीछे से आकर आगे गाड़ी अड़ाकर पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के साथ दुर्व्यवहार किया। उन्होंने कहा कि यह कार्य अति निंदनीय है हम इसका विरोध करते हैं और हरियाणा सरकार को चेतावनी देते हैं कि यदि सरकार ने दोषियों के खिलाफ जल्द से जल्द सख्त कार्रवाई नहीं की तो जजपा पूरे प्रदेशभर में जनव्यापी आंदोलन करने से पीछे नहीं हटेगी।

नए सार्वजनिक शौचालय से दुकानदारों और आमजन को मिलेगी सुविधा

महिलाओं, पुरुषों तथा दिव्यांगजनों के लिए अलग-अलग व्यवस्था की, रैंप भी बनवाए

■ प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग खरीदारी और अन्य कार्यों के लिए आते हैं शहर में

दीपक कुमार डुमड़ा ⏭बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा में नागरिक सुविधाओं को मजबूत करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। शहीद गुलाब सिंह पार्क के पास लाखों की लागत से नए सार्वजनिक शौचालय का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका है और अपने अंतिम चरण में चल रहा है, जिससे आसपास की मार्केट के दुकानदारों, ग्राहकों तथा आमजन को बड़ी राहत मिलेगी। नगर पालिका चेयरमैन सुंदर अत्रि ने कहा कि यह सुविधा लंबे समय से क्षेत्रवासियों की मांग थी, जिसे अब पूरा किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सार्वजनिक शौचालय में महिलाओं, पुरुषों तथा दिव्यांगजनों के लिए अलग-अलग व्यवस्था की गई है, ताकि सभी लोग सम्मानजनक और सुगम तरीके से इसका उपयोग कर सकें। विशेष रूप से दिव्यांगजन के लिए रैंप सहित जरूरी सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई हैं। चेयरमैन अत्रि ने कहा कि बाजार क्षेत्र में प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग खरीदारी और अन्य कार्यों के लिए आते हैं। ऐसे में स्वच्छ और आधुनिक सार्वजनिक शौचालय की आवश्यकता महसूस की जा रही थी।

जनता की हर समस्या का समाधान प्राथमिकता से होगा

विधायक कपूर वाल्मीकि ने बताया कि हांसी चुंगी, पुर रोड़, सामान्य अस्पताल के पास, शहीद गुलाब सिंह पार्क आदि स्थानों पर सार्वजनिक शौचालय बनवाए गए हैं हालिया नया शौचालय बनकर तैयार है ताकि आमजन को प्रसाधन के लिए दिक्कतों का सामना ना करना पड़े। वहीं उन्होंने बताया कि जलघर के टैंक तैयार हो चुके हैं शहरवासियों को पानी की समस्या नहीं होगी वहीं उन्होंने बताया कि सीवरेज की व्यवस्था भी जड़ से समाप्त होगी। जल्द ही पार्क और स्टेडियम के कार्यों का तीव्रता से कार्य होगा।

स्थानीय दुकानदारों और नागरिकों ने जताई खुशी

नगर पालिका सचिव संदीप गर्ग, एमई पंकज गर्ग ने बताया कि मुख्य मार्किट में बनाया गया सार्वजनिक शौचालय जिसमें महिला-पुरूष, दिव्यांगजनों के लिए अलग अलग सिस्टम बनाए गए हैं ताकि किसी को कोई परेशानी न हो। उन्होंने बताया कि उच्च स्तर की सामग्री का प्रयोग किया गया ह। वहीं स्थानीय दुकानदारों और नागरिकों ने सार्वजनिक शौचालय निर्माण पर खुशी जताते हुए नगर पालिका प्रशासन का आभार व्यक्त किया।

हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 19 अप्रैल 2026

पॉलीथिन का प्रयोग करने पर काटे चालान

भिवानी। हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड व नगर परिषद् भिवानी की टीम ने जेई चंचल के नेतृत्व में प्रतिबंधित सिंगल यूज़ प्लास्टिक सामग्री एवं पॉलीथिन का उपयोग पर रोक लगाने एवं पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से शहर में विभिन्न स्थानों पर अभियान चलाया गया। इस दौरान सेक्टर 13 व 23 और जेल मोड क्षेत्र 10 हजार रुपये के पांच चालान काटे गए। पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी शैलेंद्र अरोड़ा ने बताया कि शहर के प्रमुख स्थानों पर जागरूकता बैनर भी लगाए गए हैं, जिनके माध्यम से सिंगल यूज़ प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों के बारे में आम जनता को जानकारी दी जा रही है। उन्होंने बताया कि सिंगल यूज़ प्लास्टिक सामग्री एवं पॉलीथिन का उपयोग पर्यावरण के लिए खतरा है। उन्होंने दुकानदारों से अपील की है कि प्रतिबंधित सिंगल यूज़ प्लास्टिक और पॉलीथिन का प्रयोग ना करें।

खबर संक्षेप

कबीर जयंती को लेकर बैठक आज

भिवानी। आगामी 29 जून को भिवानी में होने वाले राज्य स्तरीय संत कबीर जयंती को लेकर 19 अप्रैल को बैठक का आयोजन होगा। बैठक सायं चार बजे दादरी गेट के समीप स्थित स्वामी जीतू पतित पावन धर्मशाला में आयोजित की जाएगी। पूर्व जिला पार्षद अजीत बामला ने बताया कि अबकी बार प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश स्तरीय संत कबीर जयंती समारोह भिवानी में मनाया जाएगा, जिसमें मुख्यतिथि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी होंगे। इसके अलावा अनेक नेतागण समारोह में शामिल रहेंगे। जयंती समारोह की तैयारियों को लेकर बैठक 19 अप्रैल को आयोजित की जाएगी, जिसमें कार्यक्रम की रुपरेखा बनाई जाएगी और तैयारियों पर चर्चा होगी।

बाल वाटिका में श्रीश्याम गुणगान महोत्सव 26 को

भिवानी। आगामी 26 अप्रैल को श्रीश्याम गुणगान मंडल भिवानी समिति के तत्वावधान में बाल भवन वाटिका में 24वां श्रीश्याम गुणगान महोत्सव का आयोजन किया जाएगा, जो सायं 4:15 बजे से प्रभु इच्छा तक चलेगा।
महोत्सव में आमंत्रित भजन सम्राट कन्हैया मित्तल चंडीगढ़ वाले और पटियाला से विशाल शैली अपने भजनों का गुणगान कर श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध करेंगे।
महंत योगी केदारनाथ बने गौशाला महासंघ के जिला अध्यक्ष

बाबा मुंगीपा गोशाला में जिला स्तरीय बैठक संपन्न

भिवानी। गोशालाओं की समस्याओं के समाधान और गो-सेवा को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से शनिवार को गौशाला महासंघ की जिला भिवानी इकाई की महत्वपूर्ण बैठक हुई। कस्बा तोशाम स्थित बाबा मुंगीपा गौशाला में बैठक की अध्यक्षता बहल गौशाला अध्यक्ष गजानंद अग्रवाल ने की। बैठक में प्रदेश कार्यकारिणी से कार्यकारी अध्यक्ष राजरूप पानू व कुलवीर खरब पानीपत विशेष रूप से उपस्थित रहे। बैठक के दौरान जिले की सभी गौशालाओं के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया और गौशालाओं के संचालन में आने वाली समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की।

रचना शुक्ला को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

भिवानी। सेवा भारती भिवानी इकाई द्वारा संचालित खाकी बाबा महिला सिलाई सेंटर में शनिवार को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। कार्यक्रम सेंटर की पूर्व मुख्य अध्यापिका स्वर्गीय रचना शुक्ला की पुण्यतिथि पर आयोजित किया, जहां उपस्थित जनसमूह ने उनकी प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें याद किया। स्वर्गीय रचना शुक्ला केवल अध्यापिका ही नहीं, बल्कि सच्ची समाजसेविका भी थी। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान सिलाई केंद्रों को नई ऊंचाई और पहचान दी।

चार दिन पहले समाधान शिविर में नप पार्षदों ने लगाई थी गुहार

रात को बारिश के पानी की निकासी के लिए 8 में से 5 मोटर खराब मिली

पंपसेट चलाने के लिए रखे जनरेटर भी मिले खराब, पुराने हाउसिंग बार्ड के दो-तीन मकानों में घुसा बारिश का पानी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

आग लगने के बाद, चले कुंआ खोदने , वाली कहावत प्रशासन पर स्टीक बैठ रही है। बारिश का पानी जमा होने के बाद प्रशासन तमाम संशाधनों को जांचने व उनको दुरुस्त करने में जुटता है। अगर पहले ध्यान दे तो लोगों के घरों तक पानी न पहुंच पाए। ऐसा ही वाक्या सचिवालय स्थित डिस्पोजल व बारिश के पानी की निकासी का पम्पसेट की बनी है। शुक्रवार शाम को आई हलकी बारिश ने ही प्रशासन की पोल खोल दी। इन दोनों जगहों पर आठ पम्पसेट लगे है,लेकिन उनमें से पांच पम्पसेट आऊट आफ आर्डर मिले। यहां पर मोटर को चलाने के लिए रखे गए जरनेटर भी खराब मिले। ऐसे में हलकी बूंदाबांदी का पानी भी नहीं निकल पाया। यहां तक कि हलकी बारिश में पुराना हाऊसिंग बोर्ड के दो से तीन मकानों में पानी घुस गया। बाद में वार्ड संख्या दो के पार्षद संदीप यादव डिस्पोजल पर पहुंचे और मोटरों की स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने जिला प्रशासन एवं विभाग से शहर में मौजूद सभी पंपसेटों को ठीक करवाने की अपील की। उन्होंने कहा कि अगर समय रहते इस का हल नहीं किया गया तो शहर में लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

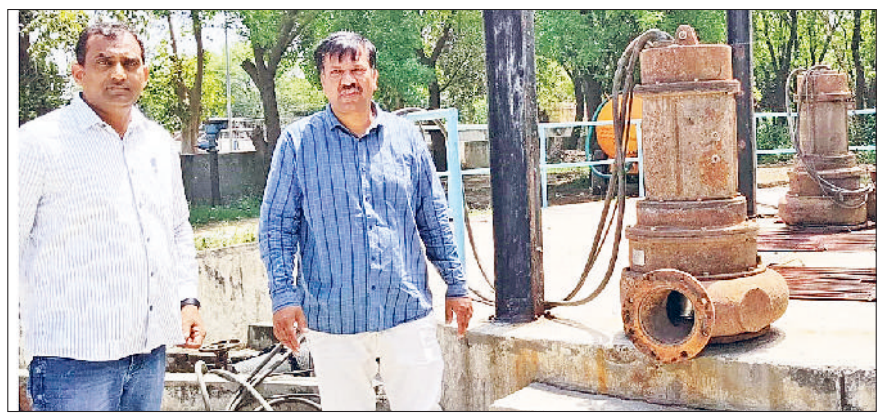

भिवानी। डिस्पोजल पर खराब पड़ी मोटरों के साथ खड़े पार्षद। *फोटो : हरिभूमि*

समाधान शिविर में दी थी पार्षदों ने शिकायत

करीब तीन चार दिन पहले पार्षद संदीप यादव व सुभाष तंवर प्रशासन के समाधान शिविर में पहुंचे और सचिवालय परिसर में बने डिस्पोजल की मोटर खराब होने की शिकायत की थी। इस पर वहां मौजूद एसडीओ ने इस तरह की कोई भी जानकारी होने से इंकार कर दिया। बल्कि समाधान शिविर के इंचार्ज ने फरियादियों को यह कह कर संतुष्ट किया कि वे जांच करवाएंगे। उन्होंने शिविर में बताया था कि अकेले सचिवालय ही नहीं बल्कि शहर के अन्य डिस्पोजल व पानी की निकासी के लिए लगे पम्पसेटों में से आधे से ज्यादा पम्प ऑऊट आफ आर्डर मिलेंगे। अगर बारिश के वक्त तक इनको दुरुस्त नहीं किया गया तो शहर का डूबना लाजिमी है।

आठ में से पांच मोटर खराब, दोनों जरनेटर की बिगड़ी सेहत

पार्षद संदीप यादव व सुभाष तंवर ने सचिवालय के पास बने डिस्पोजल की रात को जांच की तो वहां पर लगी चार मोटरों में से दो मोटर खराब मिली, और दो चालू हालत में पाई गई। इनक अलावा बारिश के पानी के लिए लगाई गई चार मोटरों में से तीन मोटर खराब मिली। यहां तक यहां पर रखे गए दोनों जरनेटर भी खराब मिले। अगर बारिश के दौरान बिजली की सप्लाई कट जाए तो पम्प चलाने के लिए जरनेटर भी नहीं चल पाएंगे। ऐसे में किस तरह से पानी की निकासी हो पाएगी। यह स्थिति वहां की है,जहां पर जिला के मुखिया बैठ रहे है। इसके अलावा शहर के अन्य पम्पों की क्या हालत होगी। यह तो सचिवालय की स्थिति जानने के बाद अपने आप आकलंन हो जाएगा। उन्होंने कहा कि शहर में बारिश के मौसम में स्थिति काफी चिंताजनक हो जाती है। शहर की सड़कें व गलियां तालाब बन जाती है। जिससे लोगों को परेशानी का सामना करना पडता है।

71,471 क्विंटल गेहूं की आवक व 13,439 का उठान

बाढ़डा। कस्बे की अनाज मंडी में लगा गेहूं का ढेर।

- आज काटे 100 किसानों के गेट पास, 4565 क्विंटल हुई आवक
- सरसों के कटे कुल 17 गेट पास, 366 क्विंटल हुई आवक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बाढ़डा

अनाजमंडी में अब तक 71471 क्विंटल गेहूं की आवक हुई और 30480 क्विंटल गेहूं की खरीद हुई है। वहीं 13439 क्विंटल गेहूं का उठान हो पाया है। अनाजमंडी में गत एक अप्रैल से सरसों व गेहूं की खरीद शुरू हुई थी।

शनिवार को 100 किसानों के गेट पास काटे गए, जिनसे 4565 क्विंटल की आवक हुई है और 4228 क्विंटल गेहूं की खरीद हुई है तथा 1900 क्विंटल गेहूं का उठान हुआ है। अनाजमंडी में अब 1870 किसानों के गेट पास काटे गए, जिनसे 71471 क्विंटल गेहूं की आवक हुई है। मंडी में अब तक 30480 क्विंटल गेहूं की खरीद हो चुकी है, जिसमें अनाजमंडी में गेहूं का 19000 क्विंटल का उठान हुआ है। इसके अलावा सरसों के किसानों के कुल 17 गेट पास काटे गए,जिनसे 366 क्विंटल सरसों की आवक हुई है। वहीं मंडी सुपरवाइजर जयप्रकाश सांगवान ने बताया कि अब तक किसानों के गेहूं के 1870 गेट पास काटे गए, जिनमें 71471 क्विंटल गेहूं की आवक हुई है। 30480 क्विंटल गेहूं की खरीद हो चुकी है तथा 13439 क्विंटल गेहूं का उठान हुआ है।

बीआरएस स्कूल में अंतरसदनीय वरिष्ठ वर्ग की वालीबॉल प्रतियोगिता, आनंद ने पाया प्रथम स्थान

बहल। बीआरसीएम ज्ञानकुंज स्कूल में अंतरसदनीय वरिष्ठ वर्ग की वालीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें अशोक सदन ने प्रथम स्थान हासिल किया। प्रतियोगिता में प्रताप सदन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया और टैगोर सदन ने तृतीय स्थान हासिल किया। शिवाजी सदन को चतुर्थ सदन हासिल किया।
शनिवार को प्रतियोगिता की शुरूआत में विद्यालय की उपप्राचार्या सरस्वती दीक्षित ने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया और जीत के लिए शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि हर युवा को शिक्षा के साथ साथ अपना पसंदीदा खेल अपनाना चाहिए और पूरी लग्न के साथ उसमें निरंतर सुधार करना चाहिए। प्रतियोगिता में विद्यालय के चारों सदनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और खेल भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

साहिल दुहन का हॉकी इंडिया अंडर-16 सब-जूनियर इंडिया कैंप में चयन

जिले के गांव प्रेमनगर के उभरते हॉकी खिलाड़ी साहिल दुहन ने इस बात को सच कर दिखाया है। साहिल का चयन भोपाल में होने वाले अंडर-16 सब जूनियर इंडिया कैंप के लिए हुआ है, जो पूरे क्षेत्र के लिए गर्व का विषय है। साहिल की सफलता की नींव वर्ष 2019 में ही रख दी गई थी। मात्र नौ वर्ष की आयु में जब बच्चे खेल-खिलौनों से मोह नहीं छोड़ पाते, तब साहिल ने गांव प्रेमनगर की खेल नर्सरी में हॉकी स्टिक थाम ली थी। खेल के प्रति यह जुनून उन्हें विरासत में मिला है, उनके पिता मनजीत सिंह स्वयं नेशनल खिलाड़ी रह चुके हैं और उन्होंने साहिल को खेल की बारीकियों एवं अनुशासन के लिए प्रेरित किया। साहिल की प्रतिभा को तराशने का श्रेय उनके कोच टिंकू दुहन को जाता है। कोच टिंकू की देखरेख में साहिल पिछले कई वर्षों से कड़ी मेहनत और पसीना बहा रहे हैं। कोच राजकुमार ने बताया कि साहिल का चयन उनकी उत्कृष्ट तकनीक एवं मैदान पर गजब की फुर्ती को देखते हुए किया गया है। भोपाल में 19 से 25 अप्रैल तक होने वाले कैंप में साहिल देश के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के साथ अभ्यास करेंगे और भारतीय हॉकी के भविष्य के रूप में अपनी दावेदारी मजबूत करेंगे।

आदर्श महिला कॉलेज में मेगा रोजगार मेले में 600 छात्रों ने दिया साक्षात्कार

- बेटियों को नौकरी देने पहुंची हरियाणा की 22 निजी कंपनियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

आदर्श महिला महाविद्यालय में बेटियों के सशक्तिकरण की दिशा कैरियर गाइडेंस एवं प्लेसमेंट सेल द्वारा मेगा रोजगार मेले का आयोजन किया। प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के संयोजन में रोजगार मेले ने न केवल महाविद्यालय की छात्राओं को बल्कि अन्य कॉलेजों के विद्यार्थियों को भी रोजगार के अवसर प्रदान किए। मेगा रोजगार मेले में प्रदेशभर की 22 प्रतिष्ठित कंपनियों ने भाग लिया, जो विशेष रूप से बेटियों को रोजगार देने के उद्देश्य से महाविद्यालय पहुंचीं। रोजगार मेले में लगभग 600 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लेते हुए विभिन्न पदों के लिए साक्षात्कार दिए।

भिवानी। साक्षात्कार में शामिल अधिकारी व छात्राएं।

शहीद सूबेदार महावीर सिंह की 110 वर्षीय पत्नी केसर देवी का निधन

- भिवानी से पूर्व सांसद जंगबीर सिंह की थी चाची

हरिभूमि न्यूज ▶▶ तोशाम

तोशाम क्षेत्र की वयोवृद्ध एवं सम्मानित महिला केसर देवी (आयु लगभग 110 वर्ष) का निधन हो गया है। वे द्वितीय विश्व युद्ध के वीर शहीद सूबेदार महावीर सिंह की धर्मपत्नी थीं।

केसर देवी एक प्रतिष्ठित परिवार से संबंध रखती थीं। वो आज़ादी से पूर्व जिला सैनिक बोर्ड के सदस्य रहे चौधरी मोहब्बत सिंह पंगाल के दूसरे नंबर के पुत्र सूबेदार महावीर सिंह की पत्नी थीं। उन्होंने अपने जीवन में त्याग, धैर्य और सादगी का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया तथा 110 वर्ष की लंबी आयु प्राप्त की। उनके दो पुत्र हुए तथा उनका परिवार आज भी पूरे क्षेत्र में सम्मानित स्थान रखता है। उनके भतीजे, पूर्व सांसद चौधरी जंगवीर सिंह का भी हाल ही में निधन हुआ है, जिससे परिवार पर लगातार दुःख का वातावरण बना हुआ है।

तोशाम। महिला केसर देवी के पार्थिव शरीर पर पुष्प चढाते हुए।

एनिमल्स सिंपैथी ऑर्गेनाइजेशन ने लगाया टीकाकरण कैंप

बेसहारा कुत्तों को लगवाएं एंटी रेबीज : शास्त्री

मिशन रेबिज फ्री इंडिया में पालतू कुत्तों को मेरा पशु मेरी पहचान के तहत मिलती है यूनिक आईडी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

एनिमल सिंपैथी ऑर्गेनाइजेशन संस्था द्वारा निरंतर चलाए जा रहे हैं। मिशन रेबीज फ्री इंडिया कार्यक्रम के तहत सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों की अनुपालन करते हुए एनिमल्स सिंपैथी ऑर्गेनाइजेशन का तीसरा कैंप गौशाला मार्केट में आयोजित किया। इस दौरान बतौर मुख्यतिथि प्रदीप शास्त्री, प्रदीप बंसल, पार्षद व एडवोकेट मनोज कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि संस्था द्वारा चलाए जा रहे मिशन रेबीज फ्री इंडिया कार्यक्रम में प्रत्येक बेसहारा व पालतू कुत्तों को मेरा पशु मेरी पहचान के तहत एक स्थाई यूनिक आईडी पहचान मिलती है, जो डिजिटल भारत बनाने के लिए अति सराहनीय कदम हैं। उन्होंने बताया कि संस्था की इस मुहिम के तहत प्रत्येक आमजन को अपने पशु का रजिस्ट्रेशन करना चाहिए व घर के पास रहने वाले बेसहारा कुत्तों को गोद लेकर उनको भी माइक्रोचिप व एंटी रेबीज टीकाकरण करवाना चाहिए। मौके पर प्रदीप शास्त्री, प्रदीप बंसल, पार्षद मनोज कुमार, संस्था संस्थापक योगेश ढिकाव, कपिल हिंदुस्तानी आदि रहे।

भिवानी। कुत्तों को रेबीज के टीके लगाते एनिमल सिंपैथी ऑर्गेनाइजेशन के सदस्य।

प्राइवेट स्कूल वेलफेयर एसोसिएशन की शिकायत के बाद हरकत में आया प्रशासन

एकेडमी में मिला छात्र तो नपेंगे क्लास इंचार्ज निजी स्कूल मुखिया के खिलाफ होगी कार्रवाई

दोनों की रिपोर्ट तैयार करके विभाग के आला अधिकारी के पास भेजी जाएगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

अब दाखिला स्कूल में और पढ़ाई एकेडमी में करने वाले बच्चों को छूट देने वाले शिक्षकों के खिलाफ कार्रवाई की तैयारी कर ली है। अगर अवैध एकेडमियों में सरकारी स्कूल का बच्चा पढ़ता पाया जाता है तो उस स्कूल के क्लास इंचार्ज तथा मुखियों के खिलाफ कार्रवाई होगी। साथ ही इन दोनों की रिपोर्ट तैयार करके विभाग के आला अधिकारी के पास भेजी जाएगी। ताकि उनके खिलाफ विभागीय कार्रवाई हो सके। इसी तरह मान्यता प्राप्त निजी स्कूल का बच्चा मिलता है तो उस स्कूल के संचालक के खिलाफ कार्रवाई होना तय है। इसमें स्कूल की मान्यता तक भी आंच आ सकती है।

इस तरह की रिपोर्टों के लिए शिक्षा विभाग ने आदेश जारी करके संबंधित बीईओ व बीईईओ की ड्यूटी लगाई है। ताकि इन आदेशों पर पूरी तरह से अमल हो सके। जिला शिक्षा अधिकारी ने इस तरह का आदेश सभी सरकारी व गैर सरकार स्कूलों के पास भेज दिया है। अधिकारी ने पत्र भेजकर सूचित कर दिया है। साथ ही अधिकारी ने भेजे निर्देशों में कहा गया है कि इस मामले में कोई कोताही बरती तो उनके खिलाफ विभागीय कार्रवाई होगी। यहां यह बताते चले कि अवेध एकेडमियों में वे बच्चे पढ़ रहे है। जिनका नाम तो किसी निजी या सरकारी में चल रहा है,लेकिन वे नियमित क्लासें एकेडमियों में ले रहे हैं। अब इस तरह की एकेडमियों के खिलाफ शिकंजा कसने की तैयारी चल रही है।

विगत में प्राइवेट स्कूल वैलफेयर एसोसिएशन जिले में अवैध एकेडमियों को बंद करवाने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया था। जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। उसके बाद उपायुक्त ने एसडीएम व जिला शिक्षा अधिकारी को इन एकेडमियों के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

उपायुक्त के आदेश के बाद जिला शिक्षा अधिकारी ने इस बारे में सभी स्कूल मुखियों को पत्र भेजकर एकेडमियों में जाने वाले विद्यार्थियों का खाका तैयार करने तथा कार्रवाई करने के निर्देश दिए है।

इ्यूटी मजिस्ट्रेट किया तैनात

निजी स्कूल संचालकों के प्रदर्शन के बाद उपायुक्त ने अवैध एकेडमियों के खिलाफ कार्रवाई के लिए सिंचाई विभाग के कार्यकारी अभियंता को डयूटी मजिस्ट्रेट तैनात किया है। जब भी कोई शिक्षा विभाग का अधिकारी इस तरह की एकेडमियों पर छापा मार कार्रवाई के लिए जाएगा तो डयूटी मजिस्ट्रेट के तौर पर उक्त अधिकारी उपस्थित रहेंगे। उनकी ही देखरेख में कार्रवाई की जाएगी। यहां यह बताते चले कि अभी तक शहर व आसपास के इलाकों की करीब 11 एकेडमियों का सूची सौंपी है। जिन पर कार्रवाई होना तय है।

ठेकेदारों व मजदूरों ने तीन माह की बकाया पेमेंट मांगी

तोशाम। मांगों को लेकर तोशाम में ज्ञापन सौपते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| तोशाम

- हर माह देनी पड़ती है लोन पर ली गई मशीनों की किस्त

खानक पहाड़ में काम करने वाले ठेकेदारों व मजदूरों की बकाया पेमेंट को लेकर उन्होंने शनिवार एचएसआईआईडीसी के कार्यालय में पहुंच अधिकारियों को ज्ञापन दिया। ठेकेदार व मजदूरों ने इस मामले में तुरंत समाधान की मांग की है। ठेकेदार व मजदूरों ने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि उनकी तीन माह की बकाया पेमेंट तुरन्त दी जाए।

उन्होंने कहा कि पीट मालिक ठेकेदार, एचएसआईआईडीसी, कंपनी के अधिकारी की एक कमेटी बनाई। कमेटी द्वारा तैयार माल व ड्रिल किए हुए होल की जांचकर गिनती की जाए। पीट मालिक ठेकेदारों ने कहा कि उन्होंने 6-7 वर्ष काम कर डवलेपमेंट किया है। किनारों पर ब्लास्टिंग की है, मिट्टी हटाई है। उसकी पेमेंट दी जाए। पीट मालिको का कहना है कि जब उन्होंने काम शुरू किया था तब उनको 2033 तक के लिए बोला गया था। उस हिसाब से वे खनन करने के लिए मशीने बैंकों से लोन करवाकर ले आए। ऐसे में मशीनों की हर माह किस्त देनी पड़ती है। उन्होंने मांग की है कि मशीनों की किस्त भरने व आगे काम ढूंढने के लिए 6 माह यहीं काम करने दिया जाए। जबतक समाधान नहीं होता उनकी पीट बंद रहेंगी। उन्होंने कहा कि इस मामले को कैबिनेट मंत्री श्रुति चौधरी के संज्ञान में भी लाया जाएगा। इस मौके पर मंदीप कांटियाँ, सुनील दहिया, सुबेसिंह, बलवान, संजय, सुनील बुशान आदि मौजूद थे।

अग्निशमन दस्ते के कर्मचारियों का धरना 11 वें दिन भी जारी

वालंटियरों के भरोसे अग्निशमन सेवाएं, बड़ा हादसा होने का अंदेशा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। एकत्रित कर्मचारियों को संबोधित करता एक वक्ता। फोटो : हरिभूमि

अपनी जायज मांगों को लेकर प्रदेश भर के फायर कर्मचारी लामबंद हैं। फायर कर्मचारी संघ के जिला प्रधान अजय श्योराण के नेतृत्व में चल रही यह हड़ताल शनिवार को 11वें दिन में प्रवेश कर गई है। कर्मचारियों के कड़े रुख और सरकार की अनदेखी के बीच अब शहर की सुरक्षा को लेकर भी सवाल खड़े होने लगे हैं। राज्य प्रधान राजेन्द्र सिन्ध व राज्य महासचिव गुलशन भारद्वाज ने सरकार की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि सरकार कर्मचारियों की मांगों को पूरा करने के बजाय कामचलाऊ व्यवस्था कर रही है।

हड़ताली कर्मचारियों के स्थान पर वालंटियरों से गाड़ियां चलवाई जा रही हैं। नेताओं ने चेतावनी दी कि इन वालंटियरों को न तो भारी वाहन चलाने का अनुभव है और न ही आग बुझाने की तकनीकी समझ। ऐसे में यदि कोई बड़ी दुर्घटना होती है, तो इन अनुभवहीन हाथों के कारण जान-माल का अधिक नुकसान हो सकता है, जिसकी पूरी जिम्मेदारी सरकार की होगी। यूनियन के नेताओं ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि सरकार ने जल्द ही बातचीत का रास्ता नहीं अपनाया और मांगों को पूरा नहीं किया, तो इस हड़ताल को अनिश्चितकालीन हड़ताल में तब्दील कर दिया जाएगा। फायर कर्मचारियों के इस संघर्ष को अब समाज के हर वर्ग का साथ मिल रहा है। इस मौके परर मदन लाल पूर्व एमसी, महाबीर सिंह जांगड़ा, अवतार सिंह सांगवान, और राजेश ग्रेवाल हल्का प्रधान, नगरपालिका कर्मचारी संघ के राज्य उप प्रधान पुरुषोत्तम दानव, अध्यापक संघ के राज्य संगठन सचिव सुख दर्शन सरोहा, और सर्वकर्मचारी संघ के जिला प्रधान सुमेर सिंह आर्य शामिल रहे। धरने पर बैठे फायर ब्रिगेड कर्मचारियों में भारी जोश देखा गया। संबोधन करने वालों में मुख्य रूप से बजरंग सोनी, नरेन्द्र कुमार, गौरव कुमार, प्रदीप काजला, नवीन ज्यानी, गोविंद, नवीन, रवि कुमार, प्रेम कुमार, अभिषेक और उमेश राठी शामिल रहे। कर्मचारियों का कहना है कि वे जनता को परेशान नहीं करना चाहते, लेकिन सरकार की हठधर्मिता ने उन्हें सड़क पर बैठने को मजबूर किया है। अब गेंद सरकार के पाले में है, या तो समाधान करें या फिर एक बड़े आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहें।

मज़दूर संगठनों ने सरकार के खिलाफ खोला मोर्चा

मांगों को लेकर एआईयूटीयूसी ने किया प्रदर्शन

- प्रदर्शन का नेतृत्व एआईयूटीयूसी के जिला सचिव कॉमरेड राजकुमार बासिया ने किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों गुरुग्राम, मानेसर, फरीदाबाद और पलवल आदि में मजदूरों पर हो रही कथित पुलिस कार्रवाई और उनकी लंबित मांगों को लेकर मज़दूर संगठनों ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। शनिवार को ऑल इंडिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेंटर (एआईयूटीयूसी) की जिला कमेटी ने स्थानीय लघु सचिवालय के बाहर प्रदर्शन किया तथा वहां कोई ज्ञापन ना लेने पहुंचने पर वे उपायुक्त आवास पर पहुंचे तथा जोरदार प्रदर्शन किया। मजदूरों ने सरकार विरोधी नारेबाजी करते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नाम उपायुक्त को सौंपा।

प्रदर्शन का नेतृत्व एआईयूटीयूसी के जिला सचिव कॉमरेड राजकुमार बासिया ने किया। इस मौके पर एआईयूटीयूसी के जिला प्रधान धर्मवीर सिंह व जिला सचिव कामरेड राजकुमार बासिया ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूरों का आंदोलन 2 अप्रैल से अपनी जायज मांगों को लेकर शांतिपूर्ण ढंग से शुरू हुआ था। मजदूरों का आरोप है कि सरकार और प्रशासन ने उनकी समस्याओं को सुनने और समाधान निकालने के बजाय लाठी और दमन का रास्ता चुना है। बासिया ने बताया कि 8 अप्रैल को न्यूनतम वेतन में संशोधन की घोषणा तो की गई, लेकिन ठीक अगले दिन 9 अप्रैल से मजदूरों पर पुलिसिया कार्रवाई तेज कर दी गई। शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे मज़दूरों को गिरफ्तार करना और उन पर बल प्रयोग करना लोकतंत्र में निंदनीय है। उन्होंने बताया कि ज्ञापन के माध्यम से बढ़ती महंगाई के अनुपात में न्यूनतम वेतन में सम्मानजनक वृद्धि किए जाने, कार्यस्थलों पर मज़दूरों के लिए मूलभूत सुविधाएं और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जाने, मज़दूरों के साथ किए जा रहे अमानवीय व्यवहार और पुलिस दमन को तुरंत बंद करने , आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किए गए श्रमिकों को तुरंत रिहा किए जाने तथा घायल मज़दूरों को उचित इलाज व मुआवजा दिए जाने, श्रम कानूनों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने की मांग की। इस मौके पर एआईयूटीयूसी के जिला प्रधान धर्मवीर सिंह, संदीप मेहरा, सुखबीर सिंह, रामेहर, राजेराम, संतोष, पूनम, अनिता, सरोज, सुनील, युवी सहित अन्य साथी शामिल रहे।

रोडवेज परिचालक ने महिला का सोने का मंगलसूत्र लौटाया

भिवानी। हरियाणा रोडवेज के परिचालक ने अपनी ईमानदारी से साबित कर दिया कि इंसानियत अभी जिंदा है। रोडवेज परिचालक वजीर सिंह ने एक यात्री का खोया हुआ सोने का मंगलसूत्र लौटाकर न केवल परिवार की खुशियां वापस दी, बल्कि पूरे महकमे का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। भिवानी निवासी युवा अमरदीप लाड़वाल पत्नी के साथ सोनीपत से भिवानी का सफर कर रहे थे। घर पहुंचने पर उन्हें पता चला कि पत्नी का सोने का मंगलसूत्र गायब है। हरियाणा रोडवेज की बस में ड्यूटी पर तैनात तालु निवासी कंडक्टर वजीर सिंह को बस निरीक्षण के दौरान ये मंगलसूत्र मिला। अमरदीप लाड़वाल ने जब रोडवेज विभाग से संपर्क साधा तो पता चला कि उनकी बस के कंडक्टर वजीर सिंह को आभूषण मिला है। संपर्क होने पर वजीर ने पूरी तसल्ली करने के बाद मंगलसूत्र ससम्मान दंपति को सौंप दिया।

किसान सभा 20 को मंडी कार्यालयों के सामने देगी धरना

किसानों ने मुआवजा दिलाने को लेकर आंदोलन की बनाई रूपरेखा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

शहीद भगत सिंह यादगार भवन में अखिल भारतीय किसान सभा की जनरल बाडी की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता किसान सभा के जिला प्रधान रामफल देशवाल ने की तथा संचालन जिला सचिव मास्टर जगरोशन ने किया। इस मौके पर किसान सभा के राष्ट्रीय उपप्रधान कामरेड इंद्रजीत सिंह ने कहा कि इस समय कृषि का संकट बढ़ रहा है। राज्य सरकार ने किसानों को अनेक पोर्टलों में उलझा रखा है और अब मंडियों में बायोमैट्रिक जैसी अनावश्यक शर्तें लगाकर खरीद प्रक्रिया को एक तरह से ठप या धीमा कर दिया हैं। वहीं बेमौसमी बारिश से मंडियों में आई फसल के बचाव के लिए प्रशासन व सरकार ने कोई ठोस सुविधा मुहैयार नहीं करवाई व शीघ्र उठान नहीं होने से सरसों व गेहूं भीगने से व्यापारियों व किसानों को भारी नुकसान हो रहा है।

वहीं जलभराव/बाढ़ से किसान की खरीफ फसल नष्ट हो गई, तीन दर्जन गांवों में प्रभावित/पीड़ित किसानों को आज तक मुआवजा नहीं मिला तथा

भिवानी। शहीद भगत सिंह यादगार भवन में किसान सभा की बैठक को संबोधित करते सभा के राष्ट्रीय उपप्रधान कामरेड इंद्रजीत सिंह। फोटो : हरिभूमि

हाल ही में बेमौसमी बारिश व ओलावृष्टि से गेहूं, सरसों की फसल में 40 प्रतिशत नुकसान हुआ है, जिसका मुआवजा भी नहीं मिला है। जलभराव से अनेक गांवों में हजारों एकड़ में रबी सीजन की फसल की बुआई भी नहीं हो पाई हैं, वहीं खरीफ फसल 2023 का 350 करोड़ रुपये बीमा क्लेम का क्षेमा कंपनी ने फ्रॉड किया था, उसकी उच्च स्तरीय न्यायिक जांच व बीमा का भुगतान लेने के लिए नौ महीने से किसान लोहारू एसडीएम कार्यालय के सामने रात दिन महापड़ाव डाले हुए हैं, लेकिन राज्य सरकार टस से मस नहीं हो रही है। भविष्य में जलभराव व बाढ़ रोकने के लिए प्रशासन कोई ठोस उपाय नहीं किया। उन्होंने किसान सभा के गठन के 90 वर्ष पूरे होने इतिहास के बारे में सदस्यों को पूरी जानकारी दी तथा सभी के सुझाव लेते हुए आगामी आन्दोलन की रूप रेखा बनाई। बैठक में किसान सभा के राज्य महासचिव सुमित दलाल ने कहा कि 20 अप्रैल को संयुक्त किसान मोर्चा प्रदेशभर की विभिन्न मन्डियों में अधिकारियों का घेराव कर मंडी में फसल खरीद की अनावश्यक शर्तें हटाने की मांग करेगा व जलभराव/बेमोसमी बारिश से हुए नुकसान का मुआवजा देने व आगामी बाढ़ रोकथाम करने को लेकर संगठन 27 अप्रैल को हिसार में राज्य स्तरीय कन्वेंशन करेगा।

ये रहे मौजूद

बैठक में दयानंद पुनिया, कामरेड ओमप्रकाश, कर्णसिंह जेनावास, कविता आर्य, बलबीर ठाकन, संतोष देशवाल, शीला बलियाली, सुबेदार धनपत सिंह, राजेश कुंगड़, इन्द्रसिंह, मन्दरूप यादव, नरेन्द्र डाडम, करतार ग्रेवाल, रामोतार बलियाली व रणधीर सिढ़ान आदि पदाधिकारी मौजूद रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सैं.मी 10X 8 सैं.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

सामाजिक संगठनों ने चलाया जनसम्पर्क अभियान

टोल महापंचायत में शामिल करने के लिए डीसी-एनएचआई के अफसरों को भेजे पत्र

बवानीखेड़ा के आसपास के गांवों का टोल फ्री करवाने की मांग को लेकर 26 अप्रैल को होगी पंचायत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

बवानीखेड़ा। गांव सुमड़ा खेड़ा में टोल को लेकर नारेबाजी करते सामाजिक संगठन के लोग। फोटो : हरिभूमि

बवानीखेड़ा के आसपास के गांवों का टोल फ्री करवाने की मांग को लेकर हरियाणा जागृति मोर्चा ने गांव सुमड़ा खेड़ा में जनसम्पर्क अभियान चलाया। इस दौरान लोगों को 26 अप्रैल को होने वाली महापंचायत में शामिल होने का न्योता भी दिया।

दूसरी तरफ महापंचायत में शामिल होने के लिए हरियाणा जागृति मोर्चा व अन्य सामाजिक संगठनों के सदस्यों ने उपायुक्त, सीटीएम , तहसीलदार तथा एनएचआई के अधिकारियों को पत्र भेजे। उक्त सभी अधिकारियों की मौजूदगी में ही एनएचआई के अधिकारियों से सामाजिक संगठनों की बातचीत होगी। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि अगर इस दरम्यान उनकी मांग सिरे नहीं चढ़ी तो वे आंदोलन का बिगुल बजाने पर मजबूर होंगे। शनिवार को हरियाणा जागृति मोर्चा व अन्य सामाजिक संगठन के सदस्य गांव सुमड़ा खेड़ा पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने लोगों से 26 अप्रैल को महापंचायत में पहुंचने का न्यौता दिया है। उन्होंने बताया कि लोगों में उक्त महापंचायत के प्रति जबरदस्त उत्साह है। महापंचायत में अथाह भीड़ पहुंचेगी और इस दौरान उनकी समस्याओं का निराकरण करवाया जाएगा। यहां यह बताते चले कि बवानीखेड़ा में विगत में टोल प्लाजा शुरू किया गया है। हैरानी की बात यह है कि बवानीखेड़ा में नया बाईपास तैयार नहीं हो पाया है,लेकिन उसके बाद भी वाहन चालकों से टोल वसूला जा रहा है। इनके अलावा बवानीखेड़ा में अनेक जगहों पर सर्विस रोड तैयार नहीं किया गया है,जिस वजह से किसानों के खेतों में आना जाना बंद हो गया।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर राजेश सिंधू, रामकिशन काजल, धर्मपाल, कर्ण सिंह, जगदीश, नरेश, दिलबाग, बलबीर, रघुबीर, रोहतास, सुभाष, जोरा सिंह, नरेश कोठारी, संदीप, ईश्वर, राजपाल आदि मौजूद थे।

स्कूल में चोरी करने वाले गिरोह के दो सदस्य पकड़े

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- आरोपियों से 14 की-बोर्ड, 01 प्रिंटर, 05 एलईडी, 05 एलईडी स्टैंड, 02 हार्ड डिस्क, 15 माउस व 14 यूपीएस बैटरियां बरामद की

डिटेक्टिव स्टाफ लोहारू ने राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, तालू में चोरी की वारदात में शामिल संगठित गिरोह के दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस टीम द्वारा आरोपियों से 14 की-बोर्ड, 01 प्रिंटर, 05 एलईडी, 05 एलईडी स्टैंड, 02 हार्ड डिस्क, 15 माउस व 14 यूपीएस बैटरियां बरामद की गई हैं। सरकारी स्कूलों में रात के समय होने वाली चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने तथा ऐसे गिरोहों के सदस्यों की शीघ्र गिरफ्तारी के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इन्हीं निर्देशों के तहत कार्रवाई करते हुए डिटेक्टिव स्टाफ लोहारू की टीम ने सरकारी स्कूलों को निशाना बनाकर चोरी की वारदातों को अंजाम देने वाले संगठित गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, तालू की प्राचार्य द्वारा थाना सदर भिवानी में शिकायत दर्ज करवाई गई थी। शिकायत में बताया गया कि दो जनवरी की रात चोर स्कूल का ताला तोड़कर अंदर घुसे और प्रिंटर, पेन ड्राइव, हार्ड डिस्क, यूपीएस, एलईडी व अन्य सामान चोरी कर ले गए। शिकायत के आधार पर थाना सदर भिवानी में संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई।

जांच के दौरान प्रभावी कार्रवाई करते हुए डिटेक्टिव स्टाफ लोहारू के एएसआई विनोद कुमार ने न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट हासिल कर मामले में शामिल दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान रवि पुत्र अजमेर, निवासी गांव जिंदराण जिला रोहतक तथा शेर सिंह पुत्र धीर सिंह, निवासी गांव नानोद जिला रोहतक के रूप में हुई है। पुलिस टीम द्वारा दोनों आरोपियों को माननीय न्यायालय में पेश कर एक दिन का पुलिस रिमांड हासिल किया गया।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 19 अप्रैल 2026

विशेषः पृथ्वी दिवस
22 अप्रैल

केवल धरती पर ही जीवन संभव है, यह जानने के बावजूद जाने-अनजाने हम धरती को तरह-तरह से नुकसान पहुंचा रहे हैं। दुनिया भर के वैज्ञानिक मानते हैं कि सौरमंडल के सबसे खूबसूरत ग्रह धरती को बचाना किसी एक सरकार या संगठन का काम नहीं, बल्कि हम सबकी जिम्मेदारी है। हमें जागरूक होना होगा, बदलाव के छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए हम अपनी प्यारी धरती को सुरक्षित रख पाएंगे।

हम सब मिलकर बचाएं अपनी प्यारी धरती

{ आवरण कथा / रजनी अरोड़ा }

धरती जीवन का आधार है, जो एक निःस्वार्थ मां की तरह मानव के लिए अनुकूल, सुंदर प्राकृतिक वातावरण ही प्रदान नहीं करती। उसकी मूलभूत जरूरतें (भोजन, पानी, हवा, वस्त्र, घर) भी मुहैया कराती है। विडंबना है कि मनुष्य अपने विकास और सुख-सुविधाएं पाने की अंधाधुंध दौड़ में जाने-अनजाने इसी धरती को सबसे अधिक नुकसान पहुंचा रहा है। दिनों-दिन बढ़ते मानव अतिक्रमण की वजह से जहां प्राकृतिक संसाधनों की निरंतर कमी का सामना करना पड़ रहा है, वहीं कई घरेलू-व्यावसायिक कार्य-कलाप वायुमंडल में कार्बन उत्सर्जन यानी कार्बन डाई-ऑक्साइड और अन्य ग्रीन हाउस गैसों का लेवल निरंतर बढ़ाने में जिम्मेदार हैं। नासा और इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) की रिसर्च के अनुसार पिछले 150 वर्षों में धरती का औसत तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। इसका असर केवल प्रकृति पर ही नहीं, बल्कि खेती, पानी, मानव स्वास्थ्य और जीव-जंतुओं के जीवन पर भी पड़ रहा है। इन संकटों से अपनी धरती को बचाने के लिए हम सभी को अपने स्तर पर हर संभव प्रयास करने होंगे।

पर्यावरण की करें सुरक्षा

धरती को बचाने के लिए सबसे जरूरी है पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना, अच्छी आदतें अपनाना, बच्चों और दूसरों को भी प्रेरित करना। परिवार में ग्रीन रूल बनाएं और उन्हें अमल करने के लिए सजग रहें। पर्यावरण नीतियों को लेकर सचेत रहें। अपने इलाके में हरित नीतियां (पेड़ लगाने, कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक परिवहन सुधार) लागू करवाने की मांग करें। पर्यावरण संगठनों से जुड़ें।

घर को बनाएं ग्रीन होम

घर में ऊर्जा की खपत, कार्बन उत्सर्जन का सबसे बड़ा कारण है। ऊर्जा संरक्षण के लिए जब जरूरत न हो तो कमरे की लाइट, पंखे बंद कर दें। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब यूज न कर रहे हों तो स्विच ऑफ कर दें। स्टैंडबाय में भी बिजली खर्च होती है। दिन में प्राकृतिक रोशनी का अधिक उपयोग करें। साधारण बल्ब की तुलना में एलईडी बल्ब 75 प्रतिशत कम बिजली खर्च करता है और 10 गुना अधिक चलता है। यह छोटा बदलाव बिजली का बिल कम करता है और कार्बन उत्सर्जन भी। पुराने एसी, फ्रिज और वॉशिंग मशीन बहुत अधिक बिजली खर्च करते हैं। 5 स्टार रेटिंग वाले उपकरण खरीदें। इनसे 30-40 प्रतिशत बिजली बचती है। घर की छत पर सोलर पैनल लगवाना या किसी अक्षय ऊर्जा प्रदाता की मदद से बिजली लेना काफी कारगर है। यह वन-टाइम इंवेस्टमेंट है, जो आने वाले तकरीबन 25 साल तक मुफ्त बिजली देता है। सरकार इसमें सब्सिडी भी देती है। एसी को 24-25 डिग्री पर ही चलाएं। हर एक डिग्री कम करने पर 6 प्रतिशत अधिक बिजली खर्च होती है।

घर की एयर सीलिंग यानी दरवाजों और खिड़कियों की दरारें बंद करना, ऊर्जा बचत का सबसे किफायती तरीका है। इससे गर्मियों में ठंडक और सर्दियों में गर्माहट बनी रहती है और हीटिंग-कूलिंग का खर्च 15-30 प्रतिशत तक कम हो जाता है। घर में गैस या कोयले की जगह इलेक्ट्रिक हीट पंप लगाने से कार्बन फुटप्रिंट में 100 किलो कार्बन डाई-ऑक्साइड प्रति वर्ष की कमी आ सकती है। वॉशिंग मशीन हमेशा फुल लोड पर चलाएं। पानी का टेंपरेचर नॉर्मल रखें। पानी गर्म करने में एनर्जी की खपत 75-90 प्रतिशत बढ़ जाती है यानी बिजली का बिल बढ़ जाता है। इसी तरह कपड़े क्लॉथ-ड्रायर में सुखाने के बजाय बाहर धूप या खुली हवा में सुखाएं, क्योंकि वॉशिंग मशीन का क्लॉथ-ड्रायर घर में इस्तेमाल होने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (जैसे- फ्रिज, टीवी, डिशवॉशर, एसी, लैपटॉप से कहीं ज्यादा बिजली खर्च करता है।

भोजन ना करें वेस्ट

दुनिया के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में लगभग 26 प्रतिशत भाग खाद्य उत्पादन का रहता है। इसलिए खाने को वेस्ट ना करें। दुनिया में उत्पादित खाने का एक-तिहाई हिस्सा बर्बाद होता है। यानी खाद्य पदार्थ उगाने में लगा पानी, बिजली और मेहनत, सब बेकार। ऐसे में जरूरत के अनुसार ही खाना बनाना चाहिए। अगर खाना बचता भी है तो उसे फेंकने के बजाय अगले मील में खा लें या जरूरतमंद को दे दें।

सिंगल-यूज प्लास्टिक है हार्मफुल

आज प्लास्टिक-प्रदूषण की समस्या बहुत गंभीर हो चुकी है। इससे बचने के लिए सिंगल-यूज प्लास्टिक की चीजों (पॉलिथीन, प्लास्टिक कप, स्ट्रॉ, बर्तन) का प्रयोग कम से कम करें। कपड़े का थैला, स्टील की बोतल और हर्बल टूथब्रश अपनाएं। पानी के लिए रियूज होने वाली बोतल का इस्तेमाल करें।

कार्यस्थल में रखें ध्यान

अपने कार्यस्थल पर भी छोटे-छोटे प्रयासों से धरती को संरक्षित करने में अपना सहयोग आप दे सकते हैं। एंवॉयर्नमेंट फ्रेंडली सामग्री, एलईडी लाइट, ऊर्जा बचाने वाले उपकरण और कचरे का उचित प्रबंधन वाले उपकरणों का यूज करें। कागज की जगह डिजिटल दस्तावेज उपयोग करें। प्रिंट करना जरूरी हो तो पेपर के दोनों तरफ प्रिंट करें। व्यावसायिक मुद्दों पर परिचर्चा करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग को बढ़ावा दें ताकि समय और ऊर्जा की बचत हो। ऑफिस जाने के लिए अकेले कार ड्राइव करके जाने के बजाय कारपूल की आदत डालें। यानी एक गाड़ी में 4 लोग जाएं तो कार्बन उत्सर्जन 75 प्रतिशत कम होता है। मेट्रो, बस, ट्रेन जैसे सार्वजनिक परिवहन में सफर करें। अगर नई गाड़ी खरीदनी हो तो इलेक्ट्रिक वाहन खरीदें। इसमें सब्सिडी भी मिलती है। इससे पेट्रोल-डीजल पर निर्भरता तो कम होगी ही, प्रदूषण भी कम होगा। कम दूरी के लिए साइकिल या पैदल चलने की आदत डालें। पर्यावरण के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी बेहतरीन है।

अधिक से अधिक पेड़ लगाएं

पेड़-पौधे धरती को खूबसूरत हरा-भरा ही नहीं बनाते, भूमि में कटाव कम कर मजबूती लाने, भूमि की उर्वरता बढ़ाने, पर्यावरण को प्रदूषण रहित रखने में भी मदद करते हैं। हमें जीवनदायी ऑक्सीजन देते हैं और अपने जीवनकाल में तकरीबन 1 टन कार्बन डाई-ऑक्साइड सोखते हैं। आप अपने जन्मदिन, शादी की सालगिरह या किसी भी खास मौके पर पेड़-पौधे लगाने की परंपरा शुरू कर सकते हैं। कॉरपोरेट ट्री प्लांटेशन ड्राइव में शामिल होकर विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधे लगाकर ऑफिस कंपाउंड में हरियाली बढ़ाएं। हमारे ऐसे प्रयासों से भी धरती पर हरियाली बढ़ेगी। *

जल संरक्षण भी है जरूरी

जलवायु परिवर्तन से पानी का संकट भी धरती पर बढ़ता जा रहा है। दुनिया के कई देशों समेत भारत के कुछ राज्यों में भी भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। जल संरक्षण के लिए भी हम कुछ प्रयास कर सकते हैं। जैसे-ब्रश करते समय नल बंद रखना, कम समय में नहाना और टपकते नलों को ठीक करवाना। ऐसी छोटी-छोटी आदतें मिलकर हजारों लीटर पानी बचा सकते हैं। घर की छत पर वर्षा जल संग्रह प्रणाली लगाएं। यह पानी बगीचे, गाड़ी धोने और फ्लश के लिए उपयोग हो सकता है। बाजार में ऐसे नल उपलब्ध हैं, जो 50 प्रतिशत तक कम पानी उपयोग करते हैं लेकिन दबाव उतना ही रहता है। इससे पानी की बचत होती है। दुनिया के समुद्रों, नदियों में बेशुमार प्लास्टिक जमा हो चुका है। धरती पर मौजूद जल को संरक्षित करने के लिए हमें सजग होना होगा।

केवल एक दिन ही नहीं रोज मनाएं पृथ्वी दिवस

विगत कई दशकों से हम जाने या अंजाने अपनी धरती को नुकसान पहुंचाते आ रहे हैं। आज धरती के अस्तित्व पर ही संकट मंडराने लगा है। ऐसे में अब यह हमारी ही जिम्मेदारी है कि पृथ्वी संरक्षण के लिए हर संभव प्रयास करें। हर वर्ष मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, हम सबको यही संदेश देता है।

{ अवेयरनेस / लोकमित्र गौतम }

धरती हम सभी के जीवन का आधार है। लेकिन विडंबना देखिए कि हम सब धरतीवासी इसे ही सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं। ऐसे में हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाने वाला पृथ्वी दिवस, केवल एक तारीख भर नहीं है बल्कि समूचे मानव समुदाय को एक चेतावनी और सामूहिक संकल्प का प्रतीक भी है।

इस दिन की महत्ताः पृथ्वी दिवस हमें याद दिलाता है कि विकास की अंधी दौड़ में हम अपनी जड़ों को ही नष्ट करते जा रहे हैं। बढ़ता प्रदूषण, घटते जंगल और दिनोंदिन डराता जलवायु परिवर्तन, ये सब संकेत हैं कि हमें अपनी सोच और पृथ्वी मां के साथ किए जाने वाले अपने व्यवहार को बदलने की जरूरत है। पृथ्वी दिवस हमें इस बात की भी प्रेरणा देता है कि हमारे छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां आसानी से निभ सकती हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित पृथ्वी, एक स्वच्छ वातावरण और संतुलित पर्यावरण मिल सके।

पृथ्वी दिवस की शुरुआतः पृथ्वी दिवस की शुरुआत पिछली सदी में 1970 में हुई थी। इसके पीछे उस समय की वैश्विक स्थितियां जिम्मेदार हैं। सन् 1960 के दशक में अमेरिका सहित दुनिया के कई हिस्सों में औद्योगीकरण तेजी से बढ़ रहा था, लेकिन पर्यावरण संरक्षण पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जा रहा था। नदियां प्रदूषित हो रही थीं, हवा दिन पर दिन जहरीली हो रही थी और जैव-विविधता लगातार खतरे में थी। इसी सबको देखते हुए अमेरिकी सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने पर्यावरण के प्रति जन-जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से 22 अप्रैल 1970 को पृथ्वी दिवस का आयोजन किया। इस दिन करीब 2 करोड़ लोग सड़कों पर उतरे और पर्यावरण संरक्षण की मांग की। यह एक ऐतिहासिक जन-आंदोलन बन गया। इसके बाद धीरे-धीरे यह विभिन्न वैश्विक अभियानों में बदल गया और आज दुनिया भर के 190 से ज्यादा देश पृथ्वी दिवस मनाते हैं।

अधिक प्रासंगिक है आजः पृथ्वी दिवस की प्रासंगिकता, इसके शुरू किए जाने के समय से कहीं ज्यादा आज है। हम जिन समस्याओं विशेषकर पर्यावरणीय समस्याओं का आज सामना कर रहे हैं, इससे पहले ये कभी इस कदर भयानक नहीं थीं। बढ़ते तापमान, पिघलते ग्लेशियर आज जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण हैं। दिल्ली जैसे शहरों की हवा प्रदूषण के कारण इस कदर जहरीली है कि दुनिया के कई स्वास्थ्य संगठन कह चुके हैं कि दिल्ली में पूरी जिंदगी गुजारने का मतलब है, अपनी जिंदगी के 10 साल कम कर लेना। लगभग यही हाल जल संकट के मामले में भी है। किसी एक देश में नहीं बल्कि पूरी दुनिया आज जल संकट से गुजर रही है। अगर बात वनों के विनाश या जैव-विविधता के नुकसान की करें तो जितना कहें, वह कम होगा। तमाम चेतावनियों और वैज्ञानिक अध्ययनों से निकले निष्कर्षों के बावजूद हर साल दुनिया से लाखों हेक्टेयर जंगल खत्म हो रहे हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है।

वैश्विक है संकटः पृथ्वी में हर तरीके के सकारात्मक वातावरण के क्षरण का यह संकट किसी एक देश का संकट नहीं है, दुनिया के हर हिस्से में यही हो रहा है। अपवाद के तौर पर अगर कुछ देश इस विनाश के हिस्सेदार नहीं हैं, तो दूसरों के कारण उन्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ रही है। जहां तक अपने देश भारत का सवाल है, तो हमारे यहां तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण पर्यावरण पर बहुत गहरा दबाव है। खेती में रासायनिक उर्वरकों की अधिकता और लगातार मिट्टी के अनुर्वरक होते जाने के कारण फसलों का खाद पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर होते जाना, जहां चाहकर भी मृदा प्रदूषण से हम बच नहीं सकते, वहीं नदियों का प्रदूषण भी दिनोंदिन गहराता जा रहा है। हालांकि हाल के दिनों में हमारे देश में कई सकारात्मक पहलें भी देखने को मिली हैं। मसलन सौर ऊर्जा मिशन के बढ़ते कदम, प्लास्टिक प्रतिबंध के आधे-अधूरे ही सही पर लगातार बार-बार चलाए जाने वाले अभियान, किचन गार्डेनिंग और ऑर्गेनिक खेती के हो रहे प्रयास, ये दिखाते हैं कि अगर इच्छाशक्ति हो तो धरती को बर्बाद होने से हम सब सामूहिक प्रयासों से बचा सकते हैं।

छोटे कदम भी हैं महत्वपूर्णः पृथ्वी दिवस की सार्थकता तभी होगी, जब हर आदमी आगे बढ़कर इसके संरक्षण में अपना योगदान देगा। अगर हम लोग संकल्प ले लें कि रोजमर्रा की जिंदगी में प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे, पानी, बिजली की अंधाधुंध बर्बादी नहीं करेंगे, पेड़ लगाएंगे और लगे हुए पेड़ों की देखभाल करेंगे, तो इतना भर करने से ही पृथ्वी के सामने जो समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं, इनमें से आधी खत्म हो जाएंगी और अगर सरकार, विभिन्न संस्थाएं और समाज इसके विरुद्ध उठ खड़ा हो तब तो तमाम परेशानियों से मुक्त हो सकते हैं। *

{ कविता / घमंडीलाल अग्रवाल }

मेरा गांव

मिट्टी में मुक्तक मिलते हैं
गालियों-गलियों गीत,
गाय-भैंस के रंभाने में
कविता और अगीत।
छप्पर ऊपर की खपरैलें
अर्पण करती लेख,
ठेढ़ी पगडंडियां खींचती
उपन्यास की रेख।
जन-जन की बोली उपजाती
मधुर हास्य की गंध,
पहनावों में पहेलियों के
कई संकलन बंद।
नूतन प्रेमकथा देने की
पनघट ने ली ठान,
शेर, गज़ल, गीतिका लुटाती
अधरों की मुस्कान।
यहां रहट की ध्वनियां देतीं
एकांकी के भाव,
लेखक, कथाकार, कवि, शायर
लोगो, मेरा गांव।

{ व्यंग्य / पूरन सरमा }

बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा।

त्याग दीजिए नैतिकता

हालांकि आप अब तक नैतिकता का त्याग कर ही चुके होंगे, लेकिन यदि नहीं किया है तो नेक सलाह मानकर इसे अविलंब त्यागिए। इसमें बंधे रहना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। त्याग और बलिदान का युग नहीं है यह। यह युग घोर स्वार्थ-परकता, अन्याय, छल, कपट तथा प्रपंच का है। आपने थोड़ी-सी भी शालीनता बरती कि गए काम से। नैतिकता से आदमी में निष्ठा, लगन व मेहनत के भाव जन्म लेते हैं और ये भाव अब गिर चुके हैं। इन भावों को अपनाने से आदमी का पतन होता है तथा लोककल्याण की चक्की में पिसकर नष्ट हो जाता है। श्रद्धा, आदर्श, परोपकार एवं ईमानदारी जैसे शब्द अब महत्त्व खो चुके हैं। इनके अर्थ समझने की कोशिश मत करिए। वैसे तो शब्दकोषों के जो नए संस्करण आएंगे, उनमें आपको ये शब्द ही नहीं मिलेंगे। इसलिए नैतिकता को त्यागिए और स्वार्थ की अंधी दौड़ में शरीक हो जाइए, तब तो आपकी नैया इस भवसागर से पार हो जाएगी, अन्यथा इसी में डुबकी लगाते रहेंगे।

दफ्तर में जिस व्यक्ति के पास जरा-सी भी नैतिकता है, बस वही तकलीफ पा रहा है। वर्ना दूसरे तमाम लोग बाहर गुमटियों पर चाय-समोसे उड़ा रहे हैं, पान की पीकें उगल रहे हैं। आपने ही कौन-सा च्यवनप्राश खाया है, जो सारा कौशल दिखाकर पूरे दफ्तर के कार्य को निपटाना चाहते हैं। काम मत कीजिए, बस बात कीजिए। वेतन काम करने का नहीं, ऑफिस में हाजिरी लगाने का मिलता है, वह आप कर ही देते होंगे। काम करने के लिए घूस, रिश्वत तथा भेंट आदि का चलन है। भ्रष्टाचार किसलिए फैलाया गया है? बस इनका लाभ उठाइए। यह लाभ उठाने के लिए होता है, त्यागने के लिए नहीं। वेतन तो उन लोगों को भी यथासमय मिल रहा है, जो काम नहीं करते, फिर आपको कौन-सा हार्ड ड्यूटी एलाउंस मिल रहा है। यह आपकी नैतिकता ही तो है, जो आपको चैन नहीं लेने देती। नैतिकता बड़ी खराब है, जिसमें एक बार घुस जाए, निकलने का नाम ही नहीं लेती है। मेरी तमाम सज्जनों से अपील है कि वे आपनी सज्जनता को त्यागें। युग बड़ा खराब है, सब घात लगाए बैठे हैं। आपको गच्चा देने की फिराक में है दुनिया। दुर्जनता को अपनाइए, आपकी सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। समस्याओं के पहाड़ तैयार करने हैं तो सज्जन बने रहिए। यकीन न हो तो अभी आप सज्जनता के पक्ष में जनमत संग्रह करवाकर देखिए, आप अकेले रह जाएंगे। अगर यह सोचते होंगे कि यूनियन बना लेंगे, तो यह भी दिवास्वप्न है। वैसे यूनियनबाजी सज्जन आदमी कर भी नहीं सकता। इसके लिए भी आपको घाट-घाट का पानी पीने के बाद सज्जनता का पाजामा हर हालत में उतार कर फेंकना होगा। जो आदमी युग की नब्ज नहीं पहचानता, वह पछताता है। यदि आप पछताने का चाव रखते हैं तो जरूर, नैतिकता को अपनाए रहें। सज्जनता आपके भीतर होगी तो आप पब्लिक ट्रांसपोर्ट में कोई भी यात्रा आराम से नहीं कर सकेंगे। यात्रा के दौरान आपके पास जब भी कोई महिला आएगी तो खड़े होकर आप उसे बैठने को स्थान दे देंगे। अब आप खड़े रहिए, घंटे-दो घंटे। बस हो या रेल सब में दुर्जन यात्रा कर रहे हैं, वे आएंगे और किसी न किसी तरह आपकी सज्जनता का लाभ उठाकर आपकी सीट हथिया लेंगे। आप में शालीनता, विनम्रता और सदाशयता कूट-कूट कर जो भरी है, उसी का परिणाम है कि आप खड़े-खड़े परेशान होते रहेंगे और दूसरा सहयात्री पूरी सीट पर पांव फैलाकर बैठा रहेगा। आपकी हिम्मत नहीं होगी कि आप उससे यह कह दें कि वे अपने पांव समेट लें। काश, इस समय आपके पास दुर्जनता होती, लफंगई होती तो आपको सीट मिल जाती। शिष्टाचार इस युग की घोर बुराई है। आप बुराई अपनाते हैं तो यह मूर्खता नहीं तो और क्या है?

मेरी तो यही सलाह है कि आप में जो भी उच्च संस्कार बतौर इंसानियत के पैदा हो गए हैं, उन्हें अपने वैयक्तिक जीवन के हित संरक्षण के लिए अविलंब त्याग दीजिए। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

चंडीदत्त रचना-समग्र

अपने छोटे से जीवन में ही चंडीदत्त शुक्ल ने पत्रकारिता के साथ साहित्य लेखन में भी अलग पहचान बना ली थी। उनकी उपलब्ध अठहत्तर कविताओं, कहानियों और साक्षात्कार का संकलन 'चंडीदत्त रचना समग्र' पुस्तक के रूप में हाल में प्रकाशित हुआ है। इन रचनाओं से गुजरते हुए उनकी साहित्य की गहरी समझ और नई दृष्टि से रचने की प्रतिभा प्रमाणित होती है। 'जब मन का हर डर मर जाए', 'हंसती खेलती औरत', 'सो जाओ कि रात बहुत गहरी है' जैसी अनेक कविताएं और 'फिर आना अखिलेश और हंसना जोर-जोर से..', 'एक आंसू गुनगुनाता रहा रात भर' जैसी कहानियां उनके क्रिएटिव रेंज की तस्दीक करती हैं। पुस्तक में संकलित साक्षात्कार में उन्होंने अपने आरंभिक जीवन और साहित्यिक सरोकार पर बेबाक विचार भी व्यक्त किए हैं। साहित्य से आम लोगों की बढ़ती दूरी के बारे में चंडीदत्त के यह विचार ध्यान देने योग्य हैं, 'इन दिनों बहुतेरा साहित्य अमूर्त भाषा और भाव के साथ लिखा जा रहा है, जिससे जुड़ पाना सामान्य पाठक के बस का नहीं है।' *

पुस्तकः चंडीदत्त रचना-समग्र, **संपादकः** डॉ. शैलेंद्र नाथ मिश्र-राजेश ओझा, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली, नोएडा

{ लघुकथा / गोविंद भारद्वाज }

मजदूर

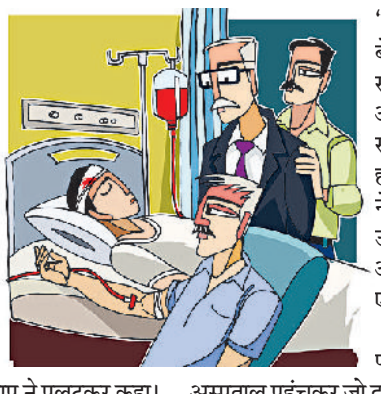

भाई साहब पिछले हफ्ते जिस लड़की को हम लोग देखने गए थे, उस लड़की का सिविल सेवा में चयन हो गया है। अब तो रिश्ता पक्का कर दीजिए।' गोपी बाबू के छोटे भाई ने कहा।

'नहीं छोटे, वह लड़की हमारे घर की कभी बहू नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने कहा।

'क्यों भैया क्या दोष है उस बच्ची में?' छोटे ने पूछा। 'दोष उसमें नहीं उसके पिताजी में है।' गोपी बापू ने पलटकर कहा। 'कौन सा दोष.. कैसा दोष भैया?' 'उसके पिताजी हमारे ही कारखाने में मजदूर हैं।' नथुने फुलाते हुए गोपी बापू ने कहा। इस पर छोटे ने कहा, 'यह तो अच्छी बात है। मेहनती बाप की मेहनती बेटी अपने घर की बहू बनेगी।' छोटे भाई ने समझाया। 'नहीं छोटे, हम अपने मजदूर को अपने बराबर नहीं बैठा सकते। उसको अपना समधी नहीं बना सकते। उसके पसीने की बदबू हमारे बदन का इत्र नहीं बन सकती।' गोपी बापू ने दलील दी। उसी समय मोबाइल की घंटी बजी। उधर से आवाज आई, 'हैलो गोपी बाबू, सिटी अस्पताल आ जाइए तुरंत। आपके बेटे का एक्सीडेंट हो गया है।'

'अरे..अभी आया।' गोपी बापू ने माथे का पसीना पोंछा फिर घबराते हुए अस्पताल भागे। अस्पताल पहुंचकर जो दृश्य गोपी ने देखा, उसे देखते रह गए। दरअसल, वही मजदूर उनके लड़के को अपना खून दे रहा था, जिसको वे अपने बराबर बैठाना नहीं चाहते थे। *

हो सकता है आपने कुछ नेशनल पार्क और वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी की यात्रा की हो। लेकिन अगर आप दुनिया के सबसे अनूठे नेशनल पार्क का अनुभव लेना चाहते हैं तो आपको मणिपुर स्थित तैरते हुए नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ की यात्रा करनी होगी। इस अनोखे नेशनल पार्क की विशेषताओं के बारे में जानिए।

दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ
नेशनल पार्क कीबुल लामजाओ

टूरिस्ट प्लेस
समीर चौधरी

मणिपुर की लोकटक झील के दक्षिण हिस्से में कीबुल लामजाओ नेशनल पार्क यानी राष्ट्रीय उद्यान है, जोकि दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ नेशनल पार्क है। मणिपुर के विष्णुपुर जिले में, इंफाल से लगभग 50 किमी. की दूरी पर यह पार्क 40 वर्ग किमी. में फैला हुआ है और यह लुप्तप्राय संगाई हिरण (नृत्य करने वाला हिरण) का अकेला प्राकृतिक घर है। यह उद्यान न केवल पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था (मत्स्य पालन, जल विद्युत) के लिए भी मायने रखता है।

जैव-विविधता से भरपूरः कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, जैवविविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह अपनी विशिष्ट तैरती फुमदिस और यहां खास तौर से पाए जाने वाले संगाई हिरण के लिए भी विख्यात है। फुमदिस सड़ी-गली वनस्पतियों, मिट्टी और जड़ों का तैरता हुआ समूह होता है। यह झील के पानी के ऊपर तैरता रहता है, जिसमें 450 से अधिक जलीय वनस्पतियों की प्रजातियां, जंगली सूअर, हॉग हिरण, बड़ी भारतीय सिवेट जैसे जीव पाए जाते हैं। नवंबर से मार्च के बीच इस पार्क में प्रवासी पक्षी भी आते हैं, इसलिए यात्रा करने का यही सबसे अच्छा समय माना जाता है।

अपने-आप में अनूठा राष्ट्रीय उद्यानः कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, एक ऐसी जगह है, जहां प्रकृति ने अपने नियम नए सिरे से लिखे हैं, जिसकी वजह से नाजुक, तैरता हुआ एक अजूबा भूखंड बन गया है। इस अलौकिक लैंडस्केप में मणिपुर का नृत्य करने वाला संगाई हिरण घूमता हुआ दिखता है, जिसके तेज गति से दौड़ते कदम, तैरते घास के मैदान पर बहुत आकर्षक लगते हैं। एक जमाना था जब यह माना जाने लगा था कि संगाई हिरण विलुप्त हो गया है। ऐसे में यहां उनके बचे रहने की संभावना ने नई उम्मीद को जगाया है, दरअसल, अनोखी प्राकृतिक संरचना फुमदिस की स्थिरता का यहां के जीवों के लिए बहुत महत्व है। न सिर्फ हिरण के लिए बल्कि उस पूरे ईकोसिस्टम के लिए भी, जो पृथ्वी पर कहीं और है ही नहीं।

बढ़ रही नाचते हिरण की संख्याः सन् 1954 तक यह मान लिया गया था कि संगाई हिरण की प्रजाति लुप्त हो गई है। संगाई तैरते फुमदिस के अतिरिक्त कहीं भी जीवित नहीं रह सकता है। इसकी वजह शिकार और फुमदिस का खत्म होना माना गया। इसके लगभग दो दशक बाद सन् 1974-75 के बीच किए गए हवाई सर्वे के दौरान उम्मीद की किरण जागी। कीबुल लामजाओ के तैरते फुमदिस में लगभग 14 संगाई देखे गए, जिसकी वजह से इनके संरक्षण प्रयासों में नया जोश आया और सन् 1995 तक इनकी संख्या बढ़कर 155 हो गई, जो सन् 2016 में 260 तक पहुंच गई। तैरते फुमदिस पर संगाई की नजाकत भरी चाल ने ही इसे 'नाचते हिरण' का नाम दिया है।

इसलिए मिला राष्ट्रीय उद्यान का दर्जाः संगाई की खोज के बाद ही भारत सरकार और मणिपुर की सरकार ने वन्यजीवन संरक्षण कानून 1972 के तहत 1977 में कीबुल लामजाओ को 'राष्ट्रीय उद्यान' (नेशनल पार्क) घोषित किया। संगाई हिरण और उसके प्राकृतिक आवास स्थल यानी फुमदिस के लिए यह कानूनी सुरक्षा जरूरी थी। संगाई केवल एक प्रजाति नहीं है बल्कि सांस्कृतिक जड़ों वाला पशु है, जिसने हजारों वर्षों के दौरान तैरते फुमदिस पर रहने के लिए खुद को ढाल लिया है और यह लैंडस्केप व मणिपुर के लोगों के बीच गहरे संबंध को प्रतिबिंबित करता है।

मौजूद हैं कई चुनौतियांः इस अनोखे राष्ट्रीय उद्यान के समक्ष कई इकोलॉजिकल चुनौतियां हैं। लोकटक हाइड्रोइलेक्ट्रिकल प्रोजेक्ट कृत्रिम रूप से पानी के स्तर को नियंत्रित करता है, जिससे फुमदिस चक्र बाधित होता है और यहां के तैरते हुए ईकोसिस्टम की स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न होता है। गौरतलब है कि कीबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान को परिभाषित करने वाला फीचर उसका तैरता इकोसिस्टम ही है, जो संगाई को जीवित रखने के लिए आवश्यक है। एक ताजा अध्ययन में मणिपुर के इस आइकॉनिक हिरण के भविष्य को लेकर गंभीर चिंताएं व्यक्त की गई हैं। क्लाइमेट चेंज की वजह से 2070 तक फुमदिस सिकुड़ जाएगा और जब फुमदिस नहीं होगा, तो संगाई का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। *

फुमदिस से जुड़े दिलचस्प तथ्य

फुमदिस वनस्पति, मिट्टी आदि की तैरती हुई मोटी परत होती है, जोकि जलीय पौधों और अन्य चीजों से मिलकर हजारों वर्षों में तैयार होती है। यह संगाई एवं अन्य वन्यजीवों को चरने की जगह, प्रजनन स्थल और आवास प्रदान करती है। दिलचस्प यह है कि फुमदिस प्राकृतिक जल चक्र है यानी यह झील के तले तक डूब जाती है पौष्टिक तत्व जज्ब करने के लिए। फिर कुछ समय बाद ऊपर उठ जाती है। यह चक्र उसके बने रहने के लिए आवश्यक है। फुमदिस केवल वनस्पति का टुकड़ा नहीं है बल्कि जीवित स्ट्रक्चर है। यह एक मोटी परत होती है, जिस पर बड़े जानवर भी रहते हैं। इस पर जो घास उगती है वह पूरे साल यहां निवास करने वाले वन्य जीवों को आवश्यक पौष्टिक तत्व प्रदान करती है।

सेल्फ इंप्रूवमेंट
शिखर चंद जैन

कई बार लोग प्रतिभावान और क्षमतावान होते हुए भी एक सीमित दायरे से बाहर निकलकर कुछ बड़ा अचीव नहीं कर पाते। अगर लाइफ में कुछ बड़ा हासिल करना है तो अपनी क्षमताओं को पहचान कर उसे एक्सप्लोर करना जरूरी है। यह कैसे होगा, बता रहे हैं आपको।

अपनी छिपी स्ट्रेंथ को ऐसे करें एक्सप्लोर

हम अकसर अपने आपको एक मानसिक दायरे में बंद कर लेते हैं और फिर कुएं के मेंढक की तरह उस दायरे से बाहर निकलने की कोशिश ही नहीं करते। स्वयं द्वारा निर्मित अपनी मानसिक शारीरिक सीमाओं को अपनी वास्तविकता मान लेते हैं, जबकि वे केवल हमारे विचारों की उपज होती हैं। ऐसे में हम आगे नहीं बढ़ पाते। आगे बढ़ने और तरक्की करने के लिए जरूरी है अपनी क्षमता को एक्सप्लोर करना। इसका अर्थ है, अपने डर के पार जाना। जब आप स्वयं पर लगे 'लेबल' हटा देते हैं, तो आप पाते हैं कि आप उससे कहीं अधिक हैं, जितना आपने कभी सोचा था।

हमारे भीतर है असीमित क्षमताः हम अपनी क्षमताओं का केवल 10 प्रतिशत ही इस्तेमाल करते हैं। यह आपने अकसर पढ़ा या सुना होगा। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि बाकी 90 प्रतिशत क्षमता का क्या होता है? वह बिना उपयोग के ही व्यर्थ के कामों में जाया हो जाती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इंसानी दिमाग की क्षमता का कोई अंत नहीं है। कैरोल ड्वेक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'माइंडसेट' में बताती हैं, 'ग्रोथ माइंडसेट' के साथ, हम अपनी क्षमता को असीमित रूप से विकसित कर सकते हैं। जब हम यह मानते हैं कि हमारी बुद्धिमत्ता और प्रतिभा को मेहनत और सीखने के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है, तो हम अपनी सीमाओं को तोड़कर आगे बढ़ सकते हैं।' अब्राहम मैस्लो, जो मानवतावादी मनोविज्ञान के जनक माने जाते हैं, का मानना था कि हर इंसान में आत्म-वास्तविकीकरण की क्षमता होती है। यह वह अवस्था है, जहां हम अपनी पूरी क्षमता को पहचानते हैं और उसे हासिल करते हैं। उनके अनुसार, यह हम सभी की अंतर्निहित इच्छा होती है कि हम वह बनें, जो हम बनने के लिए सक्षम हैं।

लोगों का साथ लेंः हमारी क्षमता केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। आधुनिक समाजशास्त्र के प्रमुख संस्थापकों में से एक एमिल दुर्खीम का मत है कि कि हम सामाजिक संबंधों और सहयोग के माध्यम से अपनी क्षमता को बढ़ा सकते हैं। हमारे आस-पास के लोग, हमारी संस्कृति और हमारा सामाजिक माहौल हमारी क्षमताओं को आकार दे सकते हैं। दूसरों की मदद लेने से ही नहीं, उनकी मदद करने से भी हमारी क्षमताएं बढ़ती हैं। प्रमुख समाजशास्त्री मैक्स वेबर का मानना था कि अनुशासित और केंद्रित मेहनत, जो कि एक सामाजिक गुण भी है, से हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं।

कैसे करें अपनी क्षमता को एक्सप्लोरः अपनी असीमित क्षमता को एक्सप्लोर करने के लिए सबसे पहले, यह विश्वास करें कि आप में कुछ भी हासिल करने की क्षमता है। कभी भी नई चीजें सीखना न छोड़ें। नई किताबें पढ़ें और निरंतर नए अनुभव प्राप्त करें। कभी भी हार न मानें। अपनी असफलताओं से सीखें और आगे बढ़ें।

दिमाग के लचीलेपन का इस्तेमाल करें: जीनियस पैदा नहीं होते, गहन अभ्यास से जीनियस बनते हैं। प्रतिभा विकसित की जा सकती है। हमारा दिमाग लचीला होता है। इसका नियमित उपयोग और दिमागी मशक्कत करने से इसकी क्षमता निरंतर बढ़ती है। इस संबंध में जिम क्विक अपनी बेस्ट सेलर पुस्तक 'लिमिटलेस' में लिखते हैं, 'अपने दिमाग को अपग्रेड करें, कुछ भी तेजी से सीखें और अपने असाधारण जीवन को अनलॉक करें।' उनका कहना है कि हम अपनी सोच (माइंडसेट), प्रेरणा (मोटिवेशन) और तरीकों (मेथड्स) में बदलाव करके अपनी दिमागी क्षमताओं को असीमित कर सकते हैं, जिसमें सीमाओं को चुनौती देना, नींद को प्राथमिकता देना और लगातार अभ्यास करना शामिल है, ताकि हम तेजी से सीख सकें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। मैं यह नहीं कर सकता, जैसे विचारों को 'मैं यह सीख सकता हूं' में बदलें। अपनी बुद्धि को स्थिर न मानें, यह बढ़ सकती है। *

अक्षय तृतीया विशेष

हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है अक्षय तृतीया का पर्व। मान्यता है कि इस दिन किए जाने वाले शुभ कार्यों का अक्षय फल मिलता है। इस पर्व की महत्ता, इससे जुड़ी परंपराओं और मान्यताओं पर एक दृष्टि।

शुभ कार्यों का अक्षय फल प्रदान करती अक्षय तृतीया

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

भारतीय पंचांग में कुछ तिथियां पूरे जीवन-दर्शन को अपने भीतर समेटे रहती हैं। अक्षय तृतीया ऐसी ही एक विशिष्ट तिथि है, जो अक्षयता यानी कभी न समाप्त होने वाली ऊर्जा, पुण्य और समृद्धि का प्रतीक बनकर उभरती है।

धार्मिक-पौराणिक मान्यताएंः अक्षय तृतीया की तिथि का धार्मिक और पौराणिक आधार भी इसे विशेष बनाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान विष्णु के अवतार श्री परशुराम जी का जन्म हुआ था, जो धर्म और न्याय की स्थापना के प्रतीक माने जाते हैं। यह भी मान्यता है कि इसी दिन वेदव्यास ने महाभारत की रचना आरंभ की थी, जो भारतीय सभ्यता के नैतिक और दार्शनिक आधारों को समझने का सबसे बड़ा ग्रंथ है और इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र सुदामा द्वारा सच्चे भाव से दिए गए एक छोटे से दान के बदले उन्हें दो 'लोक' प्रदान कर दिए थे। इन सभी कथाओं का सार यही है कि निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म कभी नष्ट नहीं होता।

सिखाती है जीने का संतुलित तरीकाः भारतीय संस्कृति में यह विचार बहुत गहराई तक समाया हुआ है कि संसार की हर भौतिक वस्तु नश्वर है। लेकिन सत्कर्म, करुणा और धर्म के फल अक्षय होते हैं। अक्षय तृतीया इसी शाश्वत सत्य का उत्सव है। यह तिथि हमें याद दिलाती है कि जीवन में किए गए अच्छे कर्म, दान, सद्भाव कभी व्यर्थ नहीं जाते, वे किसी न किसी रूप में अक्षय बने रहते हैं। यह हमें केवल पूजा-पाठ की संस्कृति ही नहीं सिखाती बल्कि जीवन जीने का एक संतुलित और संवेदनशील तरीका भी सिखाती है।

कृतज्ञता व्यक्त करने का दिनः अक्षय तृतीया पर्व जिस समय मनाया जाता है, वह रबी की फसल के पकने का समय होता है। खेतों में सुनहरी बालियां लहलहा रही होती हैं और किसान अपनी नई फसल को भगवान को अर्पित करते हैं। यह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन और सम्मान का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के रूप में देखा गया है और अक्षय तृतीया, प्रकृति के उस मातृत्व के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक महत्वः अक्षय तृतीया के दिन सोना खरीदने की परंपरा केवल भौतिक समृद्धि का प्रतीक नहीं है बल्कि इस विश्वास का प्रतीक भी है कि आज किया गया निवेश भविष्य में स्थाई फल देगा। नए कार्यों की शुरुआत, गृह प्रवेश और विवाह आदि के लिए इस दिन को अत्यंत शुभ माना जाता है। विशेष बात यह है कि इस दिन किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि पूरा दिन ही शुभ-मुहूर्त वाला होता है।

दान-पुण्य और सेवा का संदेशः अक्षय तृतीया का महत्व केवल सोने-चांदी, आभूषणों या अन्य भौतिक वस्तुओं की खरीदारी तक ही सीमित नहीं है। इस दिन अन्न, जल, वस्त्र और कलश के दान करने की भी प्रथा है। गर्मी के मौसम में जरूरतमंदों को पानी पिलाना, भूखों को भोजन कराना, इस दिन ये सभी कार्य अत्यंत पुण्यदायी माने जाते हैं। ये परंपराएं हमें सिखाती हैं कि समाज में समृद्धि तभी अक्षय हो सकती है, जब हर किसी का उसमें हिस्सा हो। अक्षय तृतीया इसी सांस्कृतिक दर्शन के संतुलन का नाम है, जो बताती है कि सिर्फ भौतिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक विकास भी उतना ही जरूरी है।

शुभ कर्मों से मिलता है अक्षय फलः अक्षय तृतीया भारतीय संस्कृति की उस गहरी परंपरा से नाता रखती है, जहां धर्म, अर्थ, प्रकृति और समाज, चारों का सुंदर समन्वय होता है। यह तिथि हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमारे कर्म सही दिशा में हैं, तो उनका फल कभी समाप्त नहीं होगा। वास्तव में यही अक्षयता का वास्तविक दर्शन है। एक ऐसा जीवन, जिसमें अच्छाई निरंतर प्रवाहित होती रहे। इस प्रकार देखें तो अक्षय तृतीया केवल एक पर्व नहीं बल्कि प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन की आत्मा का मूल है, जो हमें सिखाती है- जो भी शुभ करो, वह सदा के लिए अक्षय हो जाता है। *

प्रवृत्ति
शाहिद ए. चौधरी

ज्ञान-संस्कृति-विचारों की
नई खिड़की खोलती हैं किताबें

भले ही पढ़ने और लिखने की नई-नई तकनीकें विकसित हो चुकी हैं, लेकिन किताबें हाथ में लेकर पढ़ने का सुख अनोखा होता है। पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने और कॉपीराइट के प्रति जागरूक करने के लिए ही **23 अप्रैल को विश्व पुस्तक, कॉपीराइट दिवस** मनाते हैं। इस दिवस की महत्ता पर एक नजर।

किताबें खिड़की की तरह होती हैं, जिसमें से दिखाई देता है एक नया संसार। हर नए पृष्ठ के साथ किताबें परिचित कराती हैं- नए लोगों से, नई संस्कृतियों से और नए विचारों से। गांधीजी ने कहा था, 'विचारों के युद्ध में पुस्तक ही शस्त्र है।' शायद यही वजह है कि ई-बुक्स के इस दौर में भी अनेक लोगों को अच्छे कागज पर छपी, जिल्द में बंधी, किताब अपने हाथों में लेकर पढ़ना ही अच्छा लगता है। हालांकि ऐसे लोगों को शायद आज परंपरागत मूल्यों में यथास्थिति का पक्षधर माना जा सकता है। लेकिन इससे पुस्तकप्रेमियों को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि किताबें पढ़ने की उनकी आदत जो बन गई है।

नई पीढ़ी हो रही किताबों से दूर

पढ़ने की प्रवृत्ति को लेकर एक पक्ष यह है कि रील्स और वीडियोज की आधुनिक चकाचौंध में गुम आज की पीढ़ी तो टेक्स्ट बुक्स की तुलना में नेट के वीडियो लेक्चर्स को वरीयता देती है। यह पीढ़ी किताब पढ़ने की बजाय ऑडियो-बुक्स को सुनना पसंद करती है। क्या पढ़ने और सुनने में समान एकाग्रता बनी रहती है और बराबर का ज्ञान मिलता है? इस पर बहस हो सकती है। बहरहाल, युवा पीढ़ी किताबों से जिस अंदाज से दूर हो रही है या उसे बंद कर रही है या उसे खोलना ही नहीं चाहती है, उस पर शम्स तबरेज का यह शेर याद आता है-

अजीब किस्म की उभरी थी शक्ल लफ्जों से
किताब बंद न करता तो डर गया होता।

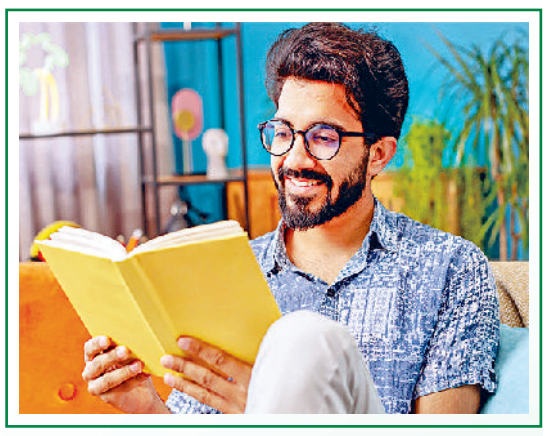

इसलिए मनाते हैं विश्व पुस्तक दिवस

किताबों से बढ़ती दूरी की पृष्ठभूमि में यूनेस्को की कोशिश है कि लोग किताबों को खोलें, उन्हें पढ़ें, उनमें अपनी दिलचस्पी बढ़ाएं और ज्ञानी बनें, क्योंकि किताबों से बढ़कर कोई पक्का दोस्त नहीं होता। किताबें पीढ़ियों के बीच में और संस्कृतियों के बीच में पुल का काम करती हैं। इसी तथ्य को मान्यता प्रदान करने के लिए यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र संघ हर साल 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाता है।

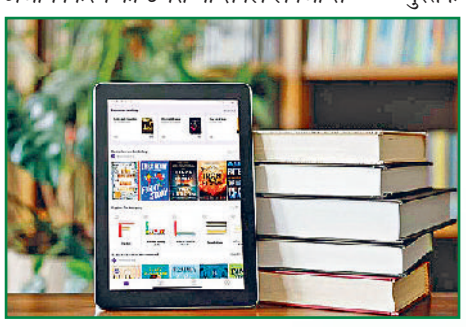

इस वर्ष के लिए चयनित पुस्तक राजधानी

हर साल इस जश्न को मनाने के लिए यूनेस्को व पुस्तक उद्योग के मुख्य सेक्टर्स- प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठन मिलकर विश्व पुस्तक राजधानी का चयन करते हैं। चुना हुआ शहर सभी आयु वर्गों और सभी समाजों में किताबों और पढ़ने की संस्कृति को प्रोत्साहित करता है, न सिर्फ मेजबान देश में बल्कि पूरे विश्व में। यूनेस्को ने अब तक 26 विश्व पुस्तक राजधानियां घोषित की हैं, जिनकी शुरुआत 2001 में मेड्रिड (स्पेन) से हुई थी। इस वर्ष 2026 की पुस्तक राजधानी रबात (मराकश) को चुना गया है। रबात में मेन फोकस, संस्कृतियों को जोड़ने में पुस्तकों की भूमिका पर होगा। इसके अलावा इस वर्ष पुस्तक दिवस का फोकस पढ़ने के साथ साक्षरता पर भी है, जिसमें पढ़ने के घंटे को भी प्राथमिकता दी गई है। आमतौर से शाम को 7 से 8 बजे तक का समय किताब पढ़ने के लिए मुफीद माना जाता है। यानी रोजाना कम से कम एक घंटा किताब पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित की जाए, इस पर फोकस किया जा रहा है।

नई चुनौतियां भी कम नहीं

इसके अतिरिक्त इस बात पर भी गंभीर चर्चा हो रही है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की लेखकों के लिए प्रकाशन और कॉपीराइट सुरक्षा में क्या भूमिका होनी चाहिए? यह गंभीर विषय है और पेचीदा भी। एआई कॉपीराइट की परवाह किए बिना किसी के भी कार्य को सार्वजनिक करने की क्षमता रखती है, जिससे लेखकों व प्रकाशकों को नुकसान की आशंका रहती है। लेकिन एआई को नियंत्रित करना भी आसान नहीं है। फिर भी कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही होगा। *

कॉपीराइट सुरक्षा पर भी केंद्रित है यह दिवस

इस दिवस को मनाने का उद्देश्य कॉपीराइट सुरक्षा को भी प्रोत्साहित करना होता है, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है। भारत में कॉपीराइट सुरक्षा 1957 के कॉपीराइट कानून से संचालित होती है, जिसके तहत स्वतः ही मूल साहित्य, नाटक, संगीत, सिनेमेटोग्राफ फिल्म्स/साउंड रिकॉर्डिंग्स सुरक्षित हो जाती हैं। सुरक्षा के लिए पंजीकरण आवश्यक नहीं है, लेकिन विवाद की स्थिति में प्रथम दृष्टया इसे साक्ष्य माना जाता है। कॉपीराइट सुरक्षा आमतौर से लेखक के जीवनकाल और उसके बाद अतिरिक्त 60 वर्षों तक लागू रहती है। यह 60 साल लेखक की मृत्यु के दिन से गिने जाते हैं। कानूनी साक्ष्य के लिए पंजीकरण करा लेना चाहिए, भले ही वह वैकल्पिक हो। इसके लिए कॉपीराइट ऑफिस में अप्लाई करना होता है। फोटोग्राफ, फिल्म, साउंड रिकॉर्डिंग, अज्ञात व सरकारी कार्य का कॉपीराइट प्रकाशन के बाद 60 वर्षों तक रहता है। इस दौरान लेखक को एक्सक्लूसिव अधिकार होता है, अपने कार्य के पुनः प्रकाशन, कापियां जारी करने, परफॉर्म करने, अनुवाद करने या एडॉप्ट करने का। कॉपीराइट उल्लंघन की स्थिति में दोनों दीवानी (मुआवजा), आपराधिक सजा (6 माह से 3 वर्ष की कैद और जुर्माना) का प्रावधान है। सेक्शन 52 के तहत कॉपीराइट उल्लंघन के अपवाद हैं जैसे निजी प्रयोग, शोध, आलोचना, समीक्षा या रिपोर्टिंग।